सदस्य बनें

सच और सरोकार की पत्रकारिता से जुड़ें
वार्षिक सदस्यता : ₹ 500 मात्र

पूरा वर्ष अखबार निःशुल्क
पैनल विज्ञापन दें
अपने व्यवसाय/संस्था का प्रचार करें 'जन जन विचार' में।
किफायती ● प्रभावी ● विश्वसनीय
संपर्क : 69001 26012

जन जन की बात जन जन तक

साप्ताहिक

जन जन विचार

D.S. Associates

Sri Om Plaza
2nd Floor, K.C. Road,
Chatribari, Guwahati-1
Phone : 7002682705

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367 :: Guwahati, Friday, 06 March 2026 :: Vol-8 Year-1 :: शुक्रवार। 06 मार्च 2026। शक संवत 1947। फाल्गुन। कृष्ण। तृतीया। :: पृष्ठ-12। मूल्य - 5 रुपए

जन चिंतन

धनेश्वर चौधरी

ईरान पर हमला

इजरायल और अमेरिका द्वारा ईरान पर किया गया हमला केवल सैन्य कार्रवाई नहीं है, यह पश्चिम एशिया की शक्ति-संतुलन व्यवस्था को झकझोर देने वाला घटनाक्रम है। परंतु जब बड़े राष्ट्र अपनी शक्ति आजमाते हैं, तब सबसे पहले और सबसे अधिक घायल आम नागरिक ही होते हैं।

स्पष्ट है कि यह धर्म की लड़ाई नहीं है। यह प्रभुत्व, संसाधनों और परमाणु क्षमता की होड़ है। वर्षों से ईरान ने इराक, सीरिया, लेबनान और यमन में अपना प्रभाव बढ़ाया। खाड़ी की सुन्नी राजशाहियों को यह विस्तार अपने अस्तित्व के लिए चुनौती लगा। 'शिया विस्तार' का भय उनके राजनीतिक निर्णयों की पृष्ठभूमि बना रहा।

आज स्थिति यह है कि सउदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश खुलकर किसी पक्ष में खड़े नहीं दिखते। उनकी चुप्पी **शेष पृष्ठ 2 पर**

महायुद्धों से दुनिया में कोहराम!

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

दुनिया के नक्शे पर एक साथ कई मोर्चों से बारूद की गंध उठ रही है। पश्चिम एशिया, यूरोप और दक्षिण एशिया-तीनों दिशाओं में जंग की लपटें तेज हो रही हैं। कहीं मिसाइलें आसमान चीर रही हैं, कहीं टैंकों की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही है तो कहीं सीमा पार हवाई हमलों से हालात विस्फोटक बन गए हैं।

मध्य पूर्व में ईरान और इजरायल के बीच सीधी जंग शुरू हो गई है। यूरोप में रूस-युक्रेन युद्ध अब भी थमने का नाम नहीं ले रहा, जहां रूस और युक्रेन के बीच लड़ाई महाशक्तियों की ताकत की परीक्षा बन चुकी है। वहीं दक्षिण एशिया में पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच सीमा संघर्ष नए क्षेत्रीय संकट का संकेत दे रहा है।

इन तीनों मोर्चों की जंग ने दुनिया को बेचैन कर दिया है। तेल बाजार में उथल-पुथल, वैश्विक व्यापार पर संकट और लाखों लोगों का विस्थापन-ये सब इस बात के संकेत हैं कि मानवता एक बार फिर अस्थिर दौर में प्रवेश कर चुकी है।

सबसे बड़ी चिंता यह है कि इन युद्धों में बड़ी शक्तियों की सीधी या परोक्ष भागीदारी है। ऐसे में अगर कूटनीति नाकाम रही तो ये टकराव किसी भी समय बड़े वैश्विक संघर्ष का रूप ले सकते हैं। सवाल सिर्फ इतना नहीं कि कौन जीतेगा-सवाल यह है कि क्या दुनिया फिर किसी नए महायुद्ध की दहलीज पर खड़ी है?

खतरनाक रूप लेता ईरान-इजरायल टकराव

मध्य-पूर्व एक बार फिर बड़े युद्ध की दहलीज पर खड़ा है। 28 फरवरी 2026 से शुरू हुआ ईरान-इजरायल संघर्ष तेजी से क्षेत्रीय युद्ध का रूप लेता जा रहा है। अमेरिका के समर्थन से इजरायल ने ईरान के कई सैन्य और रणनीतिक ठिकानों पर बड़े हमले किए, जिसके जवाब में ईरान ने इजरायल और खाड़ी क्षेत्र में मिसाइलों और ड्रोन से पलटवार किया। इस टकराव ने पूरे पश्चिम एशिया को अस्थिर कर दिया है और वैश्विक राजनीति में नई हलचल पैदा कर दी है। **शेष पृष्ठ 3 पर**

खामेनेई खत्म

ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह अली खामेनेई की मौत 28 फरवरी 2026 को सुबह लगभग 8.10 बजे हुई बताई जा रही है। बताया गया है कि तेहरान में उनके सुरक्षा परिसर और कार्यालय पर किए गए हवाई हमले में वे मारे गए। यह हमला कथित रूप से इजरायल और अमेरिका की संयुक्त सैन्य कार्रवाई के दौरान हुआ, जिसमें ईरान के कई उच्च सैन्य और सरकारी ठिकानों को निशाना बनाया गया। हमले में खामेनेई सहित कई वरिष्ठ अधिकारी भी मारे गए बताए जाते हैं।

इस घटना के बाद पूरे ईरान में शोक और क्षेत्रीय तनाव का माहौल और गहरा गया है।

'इमाम' या 'विलेन'

अमेरिका-इजरायल की संयुक्त कार्रवाई के बाद अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत की खबर ने पश्चिम एशिया की राजनीति में भूचाल ला दिया है। तीन दशक से अधिक समय तक ईरान के सर्वोच्च नेता रहे खामेनेई को लेकर दुनिया बंटी रही-और भारत भी इससे अलग नहीं था। सवाल सीधा है, पर जवाब जटिल-भारत की नजर में वे हीरो थे या विलेन?

1939 में मशहद में जन्मे खामेनेई इस्लामी क्रांति के बाद सत्ता के केंद्र में आए। 1989 में अयातुल्ला रुहोल्लाह खोमैनी की मृत्यु के बाद वे सर्वोच्च नेता बने और 36 वर्षों तक ईरान की राजनीति, सेना और नीतियों पर निर्णायक पकड़ बनाए रखी।

समर्थकों के लिए वे इस्लामी पहचान और राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीक थे। आलोचकों के लिए वे असहमति पर कठोर नियंत्रण रखने वाले, लोकतांत्रिक आवाजों को सीमित करने **शेष पृष्ठ 5 पर**

इजरायल के साथ खड़े देश

अमेरिका : सैन्य, खुफिया और कूटनीतिक समर्थन।
ब्रिटेन : सुरक्षा और रणनीतिक सहयोग।
फ्रांस और कुछ यूरोपीय देश कूटनीतिक समर्थन।
कुछ खाड़ी देश (अनौपचारिक रूप से) : ईरान के प्रभाव को रोकने के कारण इजरायल के करीब।

ईरान के साथी

हिज्बुल्लाह (लेबनान) : इजरायल के खिलाफ सक्रिय सशस्त्र संगठन।
सीरिया : ईरान का प्रमुख क्षेत्रीय सहयोगी।
इराक के शिया मिलिशिया समूह : ईरान समर्थक सशस्त्र संगठन।
यमन के हूती विद्रोही : ईरान समर्थित गुट।

संयुक्त राष्ट्र के अस्तित्व पर उठ रहे सवाल

दुनिया के कई हिस्सों में एक साथ भड़कते युद्धों ने संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की प्रभावशीलता पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। रूस-युक्रेन युद्ध, ईरान-इजरायल संघर्ष और अफगानिस्तान-पाकिस्तान टकराव जैसे संघर्षों के बीच संयुक्त राष्ट्र की भूमिका सीमित नजर आ रही है।

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना 1945 में दुनिया में शांति और सुरक्षा बनाए रखने के उद्देश्य से हुई थी, लेकिन मौजूदा हालात में कई देश और विश्लेषक पूछ रहे हैं कि जब बड़े युद्धों को रोकने **शेष पृष्ठ 5 पर**

अंदर पढ़ें

3. ☞ अब 'महाहोली' की तैयारी
4. ☞ खामेनेई की मौत और भारत
5. ☞ बिहार में बनेगी नई सरकार
7. ☞ अज्ञेय : प्रयोगवाद से नई कविता...
8. ☞ टाइगर प्रिंसेस डॉ. लतिका नाथ
9. ☞ ईरान-इजरायल युद्ध से असम...
10. ☞ जेईई के बिना भी आईआईटी में ....
11. ☞ एलन का रिकॉर्ड शतक,....

फ्रंट फूट पर गौरव गोगोई

असम विस चुनाव : कांग्रेस ने जारी की 42 उम्मीदवारों की पहली सूची

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम विधानसभा चुनाव 2026 की राजनीतिक सरगर्मी के बीच कांग्रेस ने 42 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर चुनावी बिगुल फूंक दिया। इस सूची के साथ ही पार्टी ने स्पष्ट संकेत दे दिया है कि इस बार वह असम प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गौरव गोगोई को चुनावी अभियान के केंद्र में रखकर भाजपा को सीधी चुनौती देने की रणनीति पर आगे बढ़ रही है।

कांग्रेस की केंद्रीय चुनाव समिति की मंजूरी के बाद एआईसीसी महासचिव केसी वेणुगोपाल ने सूची जारी की। पार्टी ने गोगोई को जोरहाट से मैदान में उतारा है, जिसे राजनीतिक पर्यवेक्षक कांग्रेस की चुनावी रणनीति का अहम संकेत मान रहे हैं। ऊपरी असम में भाजपा की मजबूत पकड़ को देखते हुए कांग्रेस यहां से राजनीतिक संदेश देना चाहती है कि वह इस क्षेत्र में फिर से अपनी जमीन मजबूत करने की कोशिश में है।

रिपुन बोरा की एंट्री से गरमाया बरसोला

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व पूर्व एपीसीसी अध्यक्ष रिपुन बोरा को बरसोला से उम्मीदवार बनाकर पार्टी ने इस सीट पर मुकाबले को रोचक बना दिया है। बोरा के चुनाव मैदान में उतरने को संगठन को सक्रिय करने और भाजपा के प्रभाव को चुनौती देने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है।

मीरा देंगी दिसपुर में भाजपा को सीधी चुनौती

राजधानी क्षेत्र की अहम सीट दिसपुर से कांग्रेस ने मीरा बरठाकुर गोस्वामी को मैदान में उतारा है। यह सीट भाजपा के लिए प्रतिष्ठा की सीट मानी जाती है, ऐसे में यहां मुकाबला काफी दिलचस्प रहने की संभावना है। कांग्रेस इस सीट पर भाजपा के खिलाफ मजबूत चुनौती खड़ी करना चाहती है।

कांग्रेस उम्मीदवारों की सूची

अब्दुस सोबहान अली सरकार (गौरीपुर), मार्कलाइन मराक (ग्वालपाड़ा वेस्ट), गिरीश बरुवा (बंगाईगांव), महानंदा सरकार (बरपेटा), रमेन सिंह राभा (बोको-छयगांव), नंदिता दास (हाजो-सुआलकुची), सत्यब्रत कलिता (कमलपुर), मीरा बरठाकुर गोस्वामी (दिसपुर), दिगंत बर्मन (बरखेत्री), अशोक कुमार शर्मा (नलबाड़ी), रातुल पटवारी (टिहू), बिनंद कुमार सैकिया (सिपाझार), बुबुल दास (जागीरोड), नुरुल हुदा (रूपहीहाट), तंजील हुसैन (सामागुड़ी), उत्पल बनिया (रोहा), स्वप्न कर (लमडिंग), रिपुन बोरा (बरसोला), नारायण भुइयां (बिहपुरिया), राज कुमार मेदक (जोनाई), दुर्गा भूमिज (दुमदुमा), प्रतीक बरदलै (मार्घेरिटा), प्रांजल घटोवार (चबुवा-लाहोवाल), ध्रुव गोगोई (दुलियाजान), प्रणति फुकन (नाहरकटिया), उत्पल गोगोई (सोनारी), अजय कुमार गोगोई (डिमो), देबव्रत सैकिया (नाजिरा), इंद्रनील पेगु (माजुली), पल्लवी सैकिया गोगोई (टियोक), गौरव गोगोई (जोरहाट), बितुपन सैकिया (गोलाघाट), रतन इंग्ती (बोकाजन), ऑगस्टिन एंगही (रोंगखांग), एम. शांति कुमार सिंघा (लखीपुर), अजीत सिंह (उधारबंद), डॉ. अमित कुमार कलवार (बरखोला), अभिजीत पॉल (सिलचर), अमीनुल हक लस्कर (सोनाई), जकारिया अहमद (करीमगंज नॉर्थ), कार्तिक सेना सिन्हा (पाथरकांदी), सुरुचि राय (रामकृष्ण नगर)

नाजिरा से फिर देबव्रत सैकिया

विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष देबव्रत सैकिया को एक बार फिर नाजिरा से उम्मीदवार बनाया गया है। लंबे समय से इस सीट का प्रतिनिधित्व कर रहे सैकिया कांग्रेस के सबसे अनुभवी और मुखर नेताओं में गिने जाते हैं। पार्टी को उम्मीद है कि उनके अनुभव और स्थानीय पकड़ का फायदा चुनाव में मिल सकता है।

गठबंधन की गुत्थी अभी बाकी

उम्मीदवारों की घोषणा ऐसे समय में हुई है जब कांग्रेस और संभावित सहयोगी दल राइजर दल के बीच सीट बंटवारे को लेकर बातचीत पूरी तरह सुलझ नहीं पाई है। सूत्रों के अनुसार, दोनों दलों के बीच एक सीट को लेकर मतभेद बना हुआ है। हालांकि दोनों पक्ष सार्वजनिक रूप से गठबंधन बनाए रखने की बात कह रहे हैं।

साप्ताहिक राशिफल

06 से 12 मार्च 2026 ।। विक्रम संवत 2082-**मास :** फाल्गुन, **पक्ष :** कृष्ण, **तिथि:** तृतीया

इस सप्ताह भाग्य आपका साथ देगा। कार्यक्षेत्र में सफलता के योग बनेंगे तथा व्यापार में लाभ एवं आर्थिक उन्नति के संकेत मिलेंगे। नए अवसर प्राप्त हो सकते हैं, जिनका सही उपयोग आपको आगे बढ़ाएगा।

इस सप्ताह थोड़ा संयम और धैर्य रखना आवश्यक होगा। नए कार्य की शुरुआत से पहले सावधानी बरतें तथा व्यापार पर विशेष ध्यान दें। खर्चों पर नियंत्रण रखें और स्वास्थ्य के प्रति भी सजग रहें।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नौकरी में उन्नति के योग बनेंगे तथा व्यवसायिक क्षेत्र से लाभ मिलने की संभावना है। करियर में सफलता प्राप्त होगी और शुभ यात्रा के योग भी बन सकते हैं।

नए आय स्रोत खुल सकते हैं। समाज में सम्मान मिलेगा तथा व्यापार और कारोबार में सफलता के संकेत हैं। विद्यार्थियों के लिए यह समय अनुकूल रहेगा।

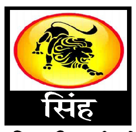

पारिवारिक समझदारी से पुराने रुके हुए कार्य पूरे होंगे। किसी विवाद का समाधान संभव है। आर्थिक उन्नति के साथ-साथ स्वास्थ्य लाभ भी मिलेगा।

किसी नई योजना की शुरुआत हो सकती है। समय का सदुपयोग करने से लाभ होगा। विद्यार्थियों एवं युवाओं के लिए सफलता के योग बनेंगे। रिश्तों में मधुरता बनाए रखें।

इस सप्ताह कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। समझदारी और धैर्य के साथ कार्य करें। विवादों से बचें और अपने कार्यों पर ध्यान केंद्रित रखें।

संचित धन में वृद्धि के योग हैं। नौकरी में पदोन्नति मिल सकती है तथा मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। वाणी पर संयम रखें और बातचीत से समस्याओं का समाधान निकालें।

यह सप्ताह खुशियों से भरा हो सकता है। आर्थिक लाभ के साथ परिवार में प्रसन्नता का माहौल रहेगा। व्यापार और कार्यक्षेत्र में अच्छे अवसर मिल सकते हैं।

कार्य के प्रति सजग रहें और समय का सदुपयोग करें। विवादों से बचकर चलें। किसी यात्रा का योग बन सकता है, जो आपके लिए लाभदायक रहेगा।

यह सप्ताह आपके लिए सामान्य से बेहतर रहेगा। कई रुके हुए कार्य पूरे हो सकते हैं। नई योजनाओं में सफलता मिलने के संकेत हैं और आर्थिक उन्नति के योग बनेंगे।

यह सप्ताह आर्थिक एवं व्यापारिक दृष्टि से अनुकूल रहने वाला है। स्वास्थ्य लाभ के योग हैं और रिश्तों में भी सुधार आएगा। शुभ समाचार मिलने की संभावना है।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

7 मार्च (शनिवार) : संकष्ठी श्री गणेश चतुर्थी व्रत

●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

पृष्ठ 1 का शेषांश...

ईरान पर हमला

दरअसल भय और विवशता की भाषा है। एक ओर उन्हें ईरान की बढ़ती शक्ति का डर है, दूसरी ओर वे जानते हैं कि खुला युद्ध उनकी धरती को भी आग के हवाले कर सकता है।

लेकिन इन रणनीतिक गणनाओं के बीच सबसे बड़ा प्रश्न है-मानव जीवन का। बमबारी की गूंज के बीच तेहरान की गलियों में बच्चे सहमे हुए हैं। अस्पतालों में दवाइयों की कमी बढ़ रही है। रोज कमाने-खाने वाले लोगों की आजीविका ठप पड़ रही है। किसी भी राजधानी की राजनीतिक बयानबाजी उन परिवारों के आंसू नहीं पोंछ सकती, जिनके घर मलबे में बदल गए।

होर्मुज जलडमरूमध्य पर मंडराता संकट केवल व्यापार का प्रश्न नहीं है। यदि तेल आपूर्ति बाधित होती है तो उसका प्रभाव विश्वभर में महंगाई, बेरोजगारी और सामाजिक अस्थिरता के रूप में सामने आएगा। भारत जैसे ऊर्जा-निर्भर देशों के लिए यह केवल विदेश नीति का विषय नहीं, बल्कि जनजीवन से जुड़ा संकट है। ईरान की ओर से क्षेत्रीय ठिकानों पर जवाबी हमले स्थिति को और जटिल बना रहे हैं। हिंसा का यह चक्र अविश्वास को गहरा करता है। यदि संवाद के द्वार बंद हुए, तो यह संघर्ष सीमाओं से बाहर फैल सकता है।

इतिहास गवाह है-युद्ध कभी स्थायी समाधान नहीं देता। वह केवल पीढ़ियों तक चलने वाली पीड़ा छोड़ जाता है। आज आवश्यकता शक्ति प्रदर्शन की नहीं, बल्कि संयम और वार्ता की है। क्योंकि अंततः किसी भी युद्ध की सबसे बड़ी कीमत सैनिक नहीं, आम नागरिक चुकाते हैं।

प्रश्न यही है-क्या विश्व नेतृत्व सत्ता की इस होड़ से ऊपर उठकर इंसानियत को प्राथमिकता देगा, या फिर पश्चिम एशिया की रेत एक बार फिर निर्दोषों के रक्त से रंगी जाएगी?

गुवाहाटी को मिला एक और फ्लाईओवर, जाम से मिलेगी राहत

दिनेश गोस्वामी फ्लाईओवर का उद्घाटन

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम की राजधानी गुवाहाटी में यातायात व्यवस्था को सुगम बनाने की दिशा में एक और बड़ा कदम उठाते हुए मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने भरलूमुख स्थित दिनेश गोस्वामी फ्लाईओवर का उद्घाटन किया। लंबे समय से रेलवे क्रॉसिंग के कारण लगने वाले जाम से परेशान लोगों को अब इस फ्लाईओवर के शुरू होने से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है।

उद्घाटन के अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि भरलूमुख क्षेत्र में रेलवे फाटक के कारण अक्सर भारी ट्रैफिक जाम की स्थिति बन जाती थी, जिससे लोगों को काफी परेशानी होती थी। उन्होंने कहा कि नए फ्लाईओवर के शुरू होने से अब शहरवासियों को जाम की समस्या से राहत मिलेगी और आवागमन तेज व सुगम होगा।

1.2 किलोमीटर लंबा फ्लाईओवर : करीब 100 करोड़ रुपए की लागत से बना यह फ्लाईओवर लगभग 1.2 किलोमीटर लंबा है और यह भरलूमुख को शांतिपुर से जोड़ता है। यह दोनों इलाके गुवाहाटी के महत्वपूर्ण यातायात मार्ग माने जाते हैं। फ्लाईओवर के शुरू होने से शहर के पश्चिमी हिस्सों में आने-जाने का समय भी कम होगा।

रेलवे गेट नंबर-9 स्थायी रूप से बंद : फ्लाईओवर के चालू होने के साथ ही रेलवे गेट नंबर-9 को स्थायी रूप से बंद कर दिया गया है। पहले ट्रेन गुजरने के समय यहां लंबा जाम लग जाता था और लोगों को काफी देर तक इंतजार करना पड़ता था। अब यात्रियों को एक वैकल्पिक ऊंचा मार्ग मिल गया है, जिससे यातायात अधिक सुचारु रहेगा।

पूर्व केंद्रीय मंत्री के नाम पर फ्लाईओवर : मुख्यमंत्री ने बताया कि इस फ्लाईओवर का नाम पूर्व केंद्रीय कानून मंत्री और असम गण परिषद के वरिष्ठ नेता दिनेश गोस्वामी के नाम पर रखा गया है। उन्होंने कहा कि यह निर्णय असम और राष्ट्रीय राजनीति में उनके महत्वपूर्ण योगदान को सम्मान देने के लिए लिया गया है।

मुख्यमंत्री ने यह भी उल्लेख किया कि दिनेश गोस्वामी ने केंद्र से मिलने वाली सहायता में असम की हिस्सेदारी 70:30 से बढ़ाकर 90:10 कराने में अहम भूमिका निभाई थी, जिसका लाभ राज्य के विकास कार्यों को आज भी मिल रहा है।

अब 'महाहोली' की तैयारी

रिकॉर्ड बनाने के लिए सामूहिक होली गीत आयोजन की योजना

जन जन विचार
...✍ बरपेटा

असम में सांस्कृतिक रिकॉर्ड

2023 : ऐतिहासिक बिहू नृत्य सामूहिक प्रस्तुति
2024 : झुमुर नृत्य का बड़ा आयोजन
2026 : बागरुंबा नृत्य का भव्य आयोजन
अगला लक्ष्य : सामूहिक होली गीत कार्यक्रम

असम में बड़े सांस्कृतिक आयोजनों की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने राज्य में एक और ऐतिहासिक सांस्कृतिक कार्यक्रम की योजना का संकेत दिया है। बरपेटा सत्र में होली के अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि असम में रिकॉर्ड स्तर पर सामूहिक होली गीत प्रस्तुति आयोजित करने की योजना बनाई जा रही है। उन्होंने कहा कि पहले इस कार्यक्रम को इसी वर्ष आयोजित करने पर विचार किया गया था, लेकिन चुनाव कार्यक्रम को देखते हुए इसे स्थगित कर दिया गया। मुख्यमंत्री के अनुसार अब इस आयोजन को अगले वर्ष बड़े स्तर पर आयोजित करने की दिशा में तैयारी की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में पहले आयोजित बिहू और झुमुर के सामूहिक कार्यक्रमों को देश-विदेश में व्यापक सराहना मिली थी और उसी कड़ी में अब होली गीत का विशाल आयोजन राज्य की सांस्कृतिक पहचान को और मजबूत करेगा।

बरपेटा सत्र में दर्शन के दौरान मुख्यमंत्री ने कोइला बाबा और दौल गोविंद के चरणों में प्रार्थना करते हुए असम के लोगों की सुख-समृद्धि की कामना भी की।

एपीएससी टॉपर्स की तस्वीरों वाले विज्ञापन एक हफ्ते में हटाने का निर्देश

कोचिंग सेंटरों को मुख्यमंत्री की कड़ी चेतावनी

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने राज्य के कोचिंग सेंटरों को कड़ी चेतावनी देते हुए निर्देश दिया है कि वे एपीएससी परीक्षा में सफल उम्मीदवारों की तस्वीरों और नामों का इस्तेमाल कर किए जा रहे विज्ञापनों को एक सप्ताह के भीतर हटा लें। मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि कई कोचिंग संस्थान सफल अभ्यर्थियों की उपलब्धियों का अनुचित फायदा उठाकर युवाओं को गुमराह कर रहे हैं।

यह निर्देश उस समय दिया गया जब असम लोक सेवा आयोग (एपीएससी) की संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा पास करने वाले अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र वितरित किए जा रहे थे।

मुख्यमंत्री ने स्पष्ट निर्देश दिया कि सफल उम्मीदवारों के नाम और तस्वीरों का इस्तेमाल कर प्रचार करना बंद किया जाए। साथ ही सफल अभ्यर्थियों से भी अपील की गई कि वे अपनी तस्वीरों का उपयोग किसी कोचिंग संस्थान के प्रचार में न होने दें।

रटने की फैक्ट्री बन गए हैं कोचिंग सेंटर

मुख्यमंत्री ने कोचिंग संस्थानों पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि कई कोचिंग सेंटर छात्रों को रटने की आदत डालते हैं और बाद में सफल उम्मीदवारों का श्रेय खुद लेने लगते हैं। उन्होंने कहा कि एपीएससी को ऐसे प्रश्नपत्र तैयार करने चाहिए जो कोचिंग सेंटरों के रटाए हुए पैटर्न से बिल्कुल अलग हों।

उन्होंने कहा, 'सरकारी नौकरियां गरीब और मध्यम वर्ग के मेहनती युवाओं के लिए होती हैं, न कि मार्केटिंग अभियान के जरिए सफलता का दावा करने वालों के लिए।'

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले पांच वर्षों में राज्य सरकार ने 1.6 लाख नियुक्तियां दी हैं और इस दौरान भर्ती प्रक्रिया पर किसी तरह की अनियमितता का आरोप सामने नहीं आया। उन्होंने याद दिलाया कि एक समय ऐसा भी था जब एपीएससी के जरिए नौकरी पाने के लिए करोड़ों रुपए तक देने पड़ते थे।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

खतरनाक रूप लेता...

इस संघर्ष की शुरुआत 28 फरवरी 2026 को तब हुई जब अमेरिका और इजरायल ने मिलकर ईरान के कई सैन्य ठिकानों, मिसाइल बेस और रणनीतिक संस्थानों पर समन्वित हवाई हमले किए। इन हमलों का लक्ष्य ईरान की सैन्य क्षमता और उसके परमाणु कार्यक्रम को कमजोर करना बताया गया।

इन हमलों के बाद ईरान ने भी जवाबी कार्रवाई करते हुए इजरायल की ओर बैलिस्टिक मिसाइलें और ड्रोन दागे। इसके साथ ही क्षेत्र में अमेरिकी सैन्य ठिकानों को भी निशाना बनाने की धमकी दी गई।

इस संघर्ष में केवल ईरान और इजरायल ही नहीं, बल्कि कई अन्य ताकतें भी अप्रत्यक्ष रूप से शामिल होती दिख रही हैं। विशेषज्ञों के अनुसार इस युद्ध के कई बड़े प्रभाव हो सकते हैं। तेल की कीमतों में भारी उछाल, होर्मुज जलडमरूमध्य में संकट, जिससे वैश्विक व्यापार प्रभावित हो सकता है। मध्य-पूर्व में व्यापक युद्ध की आशंका।

भारत के लिए भी यह संघर्ष महत्वपूर्ण है क्योंकि लाखों भारतीय इस क्षेत्र में काम करते हैं और देश की ऊर्जा आपूर्ति का बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र से आता है।

अभी तक दोनों पक्ष पीछे हटने के संकेत नहीं दे रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि कूटनीतिक प्रयास सफल नहीं हुए तो यह संघर्ष लंबा और व्यापक युद्ध बन सकता है। मध्य-पूर्व में उठी यह जंग की लपटें केवल दो देशों तक सीमित नहीं हैं, यह पूरी दुनिया की शांति और वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने की क्षमता रखती हैं।

संपादकीय

भाषा या राजनीतिक हथियार

तमिलनाडु में एक बार फिर भाषा को लेकर सियासी संग्राम छिड़ गया है। मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने केंद्र सरकार पर हिंदी थोपने का आरोप लगाते हुए कड़ी चेतावनी दी है। सवाल केवल भाषा का नहीं, बल्कि उस संवेदनशीलता का है जो भारत जैसे बहुभाषी देश में सत्ता को दिखानी चाहिए।

भारत की पहचान उसकी भाषाई विविधता है। हिंदी इस देश की एक बड़ी भाषा है, लेकिन यह भी उतना ही सच है कि तमिल, असमिया, बांग्ला, मराठी या कन्नड़ भी उतनी ही समृद्ध और सम्मानित भाषाएं हैं। ऐसे में यदि सरकारी दफ्तरों, योजनाओं या संस्थानों के नाम इस तरह रखे जाएं कि स्थानीय समाज को यह लगे कि उसकी भाषा और संस्कृति को नजरअंदाज किया जा रहा है, तो विरोध स्वाभाविक है। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि भाषा के मुद्दे को केवल राजनीतिक हथियार बना देना भी समाधान नहीं है। हर बार 'हिंदी थोपने' और 'तमिल अस्मिता' के नाम पर राजनीतिक बयानबाजी से समस्या हल नहीं होती, बल्कि समाज में अनावश्यक तनाव पैदा होता है।

केंद्र सरकार को यह समझना होगा कि भारत में एक भाषा का प्रभुत्व नहीं, बल्कि भाषाओं का सहअस्तित्व ही देश की ताकत है। वहीं राज्यों को भी यह ध्यान रखना होगा कि भाषा के सवाल को भावनात्मक उबाल से ज्यादा संवेदनशील संवाद के जरिए सुलझाया जाए।

सुलगता सवाल ? आपके विचार

सच से डर क्यों ?

स्कूली पाठ्यपुस्तक में न्यायपालिका से जुड़ी चुनौतियों का उल्लेख होते ही देश में नया विवाद खड़ा हो गया। सर्वोच्च न्यायालय की नाराजगी के बाद संबंधित अध्याय हटाने का फैसला लिया गया। सवाल यह है कि क्या बच्चों को लोकतांत्रिक संस्थाओं की कमजोरियों से पूरी तरह अनजान रखना ही शिक्षा का उद्देश्य है?

न्यायपालिका लोकतंत्र का मजबूत स्तंभ है, इसमें कोई संदेह नहीं। नागरिक अधिकारों की रक्षा, सरकारों को जवाबदेह बनाना और संविधान की रक्षा-इन सबमें अदालतों की भूमिका ऐतिहासिक रही है। लेकिन यह भी उतना ही सत्य है कि लंबित मामलों का पहाड़, न्याय मिलने में वर्षों की देरी और कभी-कभी सामने आने वाले विवाद भी वास्तविकता का हिस्सा हैं। यदि यह सब समाज की सार्वजनिक चर्चा का विषय है, तो शिक्षा में उसका संतुलित उल्लेख क्यों नहीं होना चाहिए?

समस्या आलोचना में नहीं, बल्कि संतुलन की कमी में होती है। यदि पाठ्यपुस्तक केवल कमियों का चित्रण करे तो वह अविश्वास पैदा करेगी, लेकिन यदि हम केवल महिमा मंडन करें तो वह भी अधूरी शिक्षा होगी। लोकतंत्र में संस्थाओं की प्रतिष्ठा आलोचना से नहीं, बल्कि पारदर्शिता और आत्मसुधार से बढ़ती है।

दरअसल, यह विवाद एक गहरी कमजोरी की ओर इशारा करता है-हम अपने बच्चों को सच बताने से डरते हैं। लोकतंत्र का भविष्य अंधविश्वास से नहीं, बल्कि जागरूक नागरिकता से बनता है। शिक्षा का काम संस्थाओं को कटघरे में खड़ा करना नहीं, बल्कि उन्हें समझना और बेहतर बनाने की चेतना जगाना है।

खामेनेई की मौत और भारत

जन जन विचार
...✍ *अजय बोकिल*

ईरान के सर्वोच्च धार्मिक नेता और दुनिया भर में शिया मुसलमानों के रहनुमा अयातुल्लाह अली खामेनेई के अमेरिका और इजरायल द्वारा किए गए खात्मे पर भारत में सियासत की नई रेड लाइन खिंच गई है। देश में कांग्रेस और अन्य विपक्षी पार्टियां 'खामेनेई की हत्या पर मोदी सरकार की चुप्पी' को भारतीय विदेश नीति पर प्रश्न चिह्न बता रही हैं।

कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी ने एक अंग्रेजी अखबार में लिखे लेख में खामेनेई मामले में मोदी सरकार के रवैये को 'चिंताजनक चुप्पी' करार देते हुए संसद में इस पर तुरंत चर्चा की मांग की है।

उन्होंने खामेनेई की 'लक्षित हत्या' पर भारत सरकार के मौन को 'जिम्मेदारी से पीछे हटना' करार देते हुए कहा कि अब हमे अपनी नैतिक शक्ति के 'पुनर्अन्वेषण' और उसे स्पष्टता और प्रतिबद्धता के साथ व्यक्त करने की तत्काल आवश्यकता है। विपक्षी दलों की ओर से यह भी आरोप लगाया गया कि भारत की विदेश नीति 'संतुलित' न होकर किसी एक पक्ष में झुकी ज्यादा प्रतीत होती है।

उधर भारत सरकार ने इस पूरे मामले में कोई अधिकृत बयान जारी न कर, केवल विश्वशांति कायम रखने और संवाद से विवाद सुलझाने की वकालत की है। हमने न तो इजरायल-अमेरिका द्वारा ईरान पर हमले का समर्थन किया और न ही खामेनेई के मारे जाने की निंदा की। अलबत्ता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमले के दो दिन बाद मध्य पूर्व के खाड़ी देशों के कुछ राष्ट्राध्यक्षों से बात की और वहां रह रहे भारतीयों की सुरक्षा को लेकर चिंता जताई। यानी 'हम न तो तीन में है, न तेरह में।' चूंकि इस संघर्ष के सभी पक्ष हमारे दोस्त हैं, इसलिए हम सभी के साथ हैं या किसी के भी साथ नहीं है।

दूसरी तरफ इसका यह अर्थ भी निकाला गया कि विश्व की बड़ी आर्थिक और सैनिक ताकत होते हुए भी भारत की वैश्विक मंच पर कोई खास आवाज नहीं है।

मोदी सरकार पर आरोप है कि उसने एक ऐसे देश, जिसके साथ भारत के सदियों से मित्रतापूर्ण रिश्ते रहे हैं, के सर्वोच्च धार्मिक नेता की मौत पर राजकीय शोक घोषित करना तो दूर, सामान्य दुख तक नहीं जताया। परोक्ष रूप से यह भारत में रह रहे तमाम शिया मुसलमानों की भावनाओं की अनदेखी है।

जबकि भारत का सरकार का रवैया इस बात का संकेत है कि तीन देशों की आपसी लड़ाई में हमारी चिंताएं केवल हमारे अपने हित हैं आतंकवाद पर 'जीरो टालरेंस' के चलते हम ऐसे किसी भी पक्ष के साथ खड़े नहीं दिखना चाहते, जो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से आंतकवाद का हिमायती हो।

सोनिया गांधी ने जो कहा, जरा उसे तथ्यों, तर्कों, रणनीतिक और व्यावहारिक पैमाने पर परखें। ईरान में 1979 में जब तत्कालीन अमेरिका समर्थित शाह पहलवी को हटाकर इस्लामिक क्रांति हुई, तब भारत में जनता पार्टी की सरकार थी। उस सरकार ने भी कट्टर इस्लामिक क्रांति का खुलेमन से स्वागत नहीं किया था।

जो प्रतिक्रिया थी, वह भारत और ईरान के ऐतिहासिक और रणनीतिक रिश्तों के आधार पर थी। लेकिन उसी इस्लामिक क्रांति के शिल्पकार अयातुल्लाह रोहिला खामेनेई का जब 3 जून 1989 को निधन हुआ तो उस वक्त राजीव गांधी प्रधानमंत्री थे। उन्होंने अयातुल्लाह के देहांत पर भारत में तीन दिन का राजकीय शोक घोषित किया था। ऐसा ही शोक तब पाकिस्तान ने भी घोषित किया था। लेकिन इस बार पाकिस्तान ने कोई राजकीय शोक घोषित नहीं किया। उलटे ईरान के मामले में वह विरोधी खेमे में खड़ा दिखाई दिया। हो सकता है कि सोनिया गांधी लेख के बहाने राजीव गांधी की मुस्लिम हितैषी नीतियों की याद दिला रही हों।

याद करें, यही वो समय था, जब देश में शाह बानो और राम मंदिर की राजनीति सिर उठा रही थी। सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की चक्की चलने लगी थी। मुस्लिम तुष्टीकरण के चलते कांग्रेस का मुस्लिम वोट बैंक खिसकने लगा था, जो अभी भी आंशिक रूप में ही वापस आया है। अब कांग्रेस की मांग इसी वोट को और मजबूत करने की हो। लेकिन एक बात और याद रखें।

अयातुल्लाह खामेनेई केवल शिया मुसलमानों के नेता थे। और शियाओं में भी केवल बारह इमामो (अरबी में इत्ना आशारिया) को मानने वाले शियाओं के सर्वोच्च नेता थे। ये बारह इमाम अरब में ई.स. 599 से लेकर 869 तक हुए (सुन्नी मुसलमान इन्हें नहीं मानते)।

बारह शब्द इस विश्वास पर आधारित है कि पैगंबर मुहम्मद के परिवार से बारह पुरुष वंशज (अली इब्न अबी तालिब से लेकर मुहम्मद अल-महदी तक) वो इमाम हैं, जिन्होंने इस्लाम में शरिया की धार्मिक और न्यायसंगत व्याख्या की।

इनमें से आखिरी इमाम अल मेहदी को शिया अमर मानते हैं, जबकि बाकी 11 में से दो की हत्या और नौ को जहर देकर मार दिया गया। मारने वाले भी उनके करीबी ही थे। वैसे इस्लाम के शिया संप्रदाय में भी कई उप-संप्रदाय हैं। मसलन जैदी शियाओं का कोई एक धार्मिक नेता नहीं है। ये बारह में से केवल पांच इमामों को ही मानते हैं। शियाओं का एक और उप-संप्रदाय कासेनिया शियाओं का है, जो चार इमामों को मानते हैं। जबकि दाउदी बोहरा शियाओं के सर्वोच्च नेता सैयदना साहब और इस्माइली आगाखानी शियाओं के सर्वोच्च नेता प्रिंस आगाखान हैं।

भारत में करीब पच्चीस करोड़ मुसलमानों में से करीब 20 फीसदी शिया हैं और कुल शियाओं में 80 फीसदी बारह इमामत को मानने वाले हैं। अगर सोनिया गांधी इसी वर्ग को एड्रेस कर रही हैं तो कांग्रेस को वोट की दृष्टि से कितना फायदा होगा, समझा सकता है। जबकि ईरान के मसले में विश्व में शिया सुन्नी-विभाजन एक बार फिर से और गहरा गया है। भारत में 80 फीसदी मुस्लिम वोटर सुन्नी हैं। जहां तक राजकीय शोक घोषित करने की बात है तो दुनिया में ईरान के अलावा केवल शिया बहुल इराक ने तीन दिन का राजकीय शोक घोषित किया। एक और शिया बहुल देश अजरबैजान ने केवल शोक जताया। बाकी सुन्नी देश मोटे तौर पर खामोश ही हैं।

भारत में भी जो विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं, वो बारह इमामतपंथी शिया मुसलमान ही कर रहे हैं। इसमें भी कश्मीर घाटी में हो रहे प्रदर्शन के पीछे वहां की स्थानीय राजनीति ज्यादा है। सुन्नी महबूबा मुफ्ती अगर इन प्रदर्शनों का खुलकर समर्थन कर रही हैं तो इसके पीछे शिया मुसलमानों का वोट बैंक नेशनल कांफ्रेंस से छीनना है। अमूमन कोई भी देश किसी महान व्यक्तित्व के निधन पर शोक तभी जताता है, यदि वह राष्ट्राध्यक्ष हो अथवा उसका कोई सकारात्मक वैश्विक योगदान हो। दिवंगत अयातुल्लाह ईरान में इस्लामिक क्रांति करने वाले अयातुल्लाह रोहिला के उत्तराधिकारी थे न कि उस क्रांति के शिल्पकार। महिलाओं के बारे में उनकी सोच तो जगजाहिर है ही।

अब सवाल ये कि भारत को और उसके प्रधानमंत्री को अपनी प्रतिक्रिया क्या और कैसी देनी चाहिए थी? या फिर चुप रहना ही बेहतर था? अगर ईरान को भारत हितैषी के रूप में देखें तो इतिहास इसकी बहुत पुष्टि नहीं करता और हर धार्मिक नेता के निधन पर देश को प्रतिक्रिया देना आवश्यक नहीं है।

फिर भी मोदी मानवीय आधार पर शोक जता सकते थे। लेकिन लगता है, उन्होंने किसी वोट बैंक को एड्रेस करने की जगह व्यावहारिकता को तरजीह दी। इसका एक कारण तो अमेरिका का दबाव तो होगा ही, दूसरा कारण इजरायल से हमारी बढ़ती नजदीकी और बदलता वर्ल्ड ऑर्डर है। आज ईरान के साथ भारत तो क्या दुनिया का कोई भी देश खुलकर नहीं खड़ा है। *(ये लेखक के अपने विचार हैं।)*

बिहार में बनेगी नई सरकार

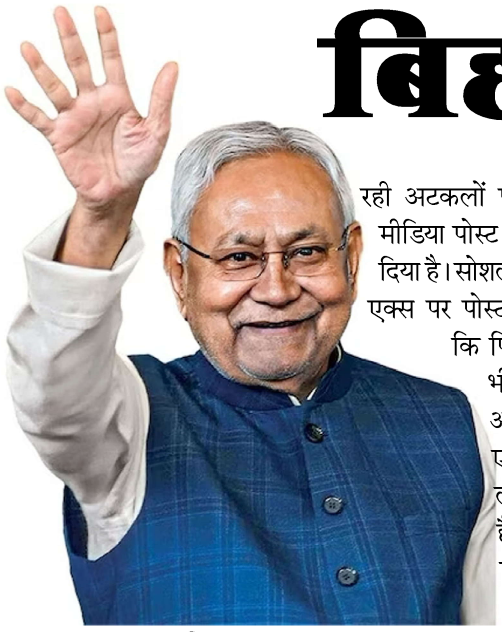

नीतीश जाएंगे ऊपरी सदन

जन जन विचार
...✍ पटना

बिहार के सीएम नीतीश कुमार राज्यसभा जाएंगे। विगत दिनों से चल रही अटकलों पर उन्होंने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए विराम दे दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर उन्होंने कहा कि पिछले दो दशक से भी अधिक समय से आपने अपना विश्वास एवं समर्थन मेरे साथ लगातार बनाए रखा है, तथा उसी के बल पर हमने बिहार की और आप सब लोगों की पूरी निष्ठा से सेवा की है।आपके विश्वास और समर्थन की ही ताकत थी कि बिहार आज विकास और सम्मान का नया आयाम प्रस्तुत कर रहा है। इसके लिए पूर्व में भी मैंने आपके प्रति कई बार आभार व्यक्त किया है। संसदीय जीवन शुरू करने के समय से ही मेरे मन में एक इच्छा थी कि मैं बिहार विधान मंडल के दोनों सदनों के साथ संसद के भी दोनों सदनों का सदस्य बनूं। इसी क्रम में इस बार हो रहे चुनाव में राज्यसभा का सदस्य बनना चाह रहा हूं। मैं आपको पूरी ईमानदारी से विश्वास दिलाना चाहता हूं कि आपके साथ मेरा यह संबंध भविष्य में भी बना रहेगा एवं आपके साथ मिलकर एक विकसित बिहार बनाने का संकल्प पूर्ववत कायम रहेगा।

निशांत को बनाएं मुख्यमंत्री : पप्पू यादव

मांझी जी, चिराग जी, लालू जी, उपेंद्र जी बिहार को भाजपा का चरागाह न बनने दें। एकमत से निशांत जी को बिना शर्त समर्थन देकर बिहार का मुख्यमंत्री बना दें। भाजपा के लिए बिहार का दरवाजा बंद कर दें। भविष्य की राजनीति आपस में फरिया लेंगे।

अनुमान न था, इतनी जल्दी हटा देगी भाजपा : मृत्युंजय तिवारी

राजद नेता मृत्युंजय तिवारी ने कहा कि बिहार की राजनीति में बड़ा उलटफेर अचानक से कल से देखने को मिल रहा है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को इतनी जल्दी चुनाव के बाद भाजपा हटा देगी, इसका अनुमान किसी को नहीं था लेकिन हमारे नेता तेजस्वी यादव लगातार कह रहे थे कि भाजपा छुष्ठ को बर्बाद कर देगी और नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री की कुर्सी से बेदखल करेगी।

बीटीसी विस्तार : विस चुनाव से पूर्व सरकार की रणनीति

जन जन विचार
...✍ कोकराझार / गुवाहाटी

बोड़ोलैंड टेरिटोरियल रीजन (बीटीआर) की राजनीति एक बार फिर सुर्खियों में है। बीटीसी कार्यकारी परिषद के विस्तार के साथ सदस्य संख्या 14 से बढ़ाकर 17 कर दी गई है। तीन नए कार्यकारी सदस्यों के शामिल होने के बाद न केवल प्रशासनिक ढांचे में बदलाव आया है, बल्कि इसे बोड़ोलैंड की बदलती राजनीतिक रणनीति के संकेत के रूप में भी देखा जा रहा है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बीटीआर की राजनीति केवल स्थानीय प्रशासन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका असर असम की व्यापक राजनीति पर भी पड़ता है। विधानसभा चुनाव के करीब आते समय बीटीसी परिषद का विस्तार कई राजनीतिक संदेश भी दे रहा है।

बीटीआर क्यों है इतना महत्वपूर्ण ?

बोड़ोलैंड टेरिटोरियल रीजन असम के चार जिलों — कोकराझार, चिरांग, बक्सा और उदालगुड़ी — को मिलाकर बना क्षेत्र है। यह क्षेत्र राजनीतिक रूप से बेहद संवेदनशील और रणनीतिक माना जाता है।

बीटीआर में कुल 40 बीटीसी सीटें हैं

यह क्षेत्र असम विधानसभा की करीब 12 सीटों को प्रभावित करता है

यहां की राजनीति में क्षेत्रीय दलों और राष्ट्रीय दलों दोनों की मजबूत मौजूदगी रहती है

इसी वजह से राज्य की बड़ी राजनीतिक पार्टियां बीटीआर में अपनी पकड़ मजबूत करने की लगातार कोशिश करती हैं।

बीटीसी विस्तार के पीछे राजनीतिक समीकरण

बीटीसी कार्यकारी परिषद का विस्तार केवल प्रशासनिक कदम नहीं माना जा रहा। इसे क्षेत्रीय राजनीति में संतुलन बनाने की रणनीति के रूप में भी देखा जा रहा है।

नए सदस्यों में भाजपा, बीपीएफ और अन्य प्रतिनिधियों को शामिल करने से यह संकेत मिलता है कि परिषद में विभिन्न राजनीतिक ताकतों को साथ लेकर चलने की कोशिश की जा रही है।

राजनीतिक पर्यवेक्षकों का कहना है कि इससे परिषद के भीतर सहयोग बढ़ सकता है, लेकिन साथ ही बीटीआप की राजनीति में नए समीकरण भी बन सकते हैं।

बीटीआर राजनीति के मुख्य खिलाड़ी

हग्रामा मोहिलारी – लंबे समय से बोड़ोलैंड की राजनीति का बड़ा नाम। बीटीआर के नेतृत्व में उनकी भूमिका निर्णायक मानी जाती है।

प्रमोद बोडो (यूपीपीएल) – हाल के वर्षों में उभरता नेतृत्व। बोड़ोलैंड समझौते के बाद क्षेत्रीय राजनीति में उनका प्रभाव बढ़ा है।

बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट (बीपीएफ) – एक समय परिषद की प्रमुख ताकत रही पार्टी आज भी क्षेत्र में मजबूत जनाधार रखती है।

भारतीय जनता पार्टी –राज्य की सत्ता में होने के कारण बीटीआर की राजनीति में भाजपा की भूमिका लगातार मजबूत होती जा रही है।

बोड़ोलैंड समझौते के बाद बदली राजनीति

2020 में हुए बोड़ोलैंड शांति समझौते के बाद क्षेत्र में हिंसा में कमी आई और विकास योजनाओं पर जोर बढ़ा। इसके साथ ही क्षेत्रीय राजनीति में भी बदलाव देखने को मिला। नई राजनीतिक पार्टियों और नेतृत्व के उभरने से बीटीआर की राजनीति पहले से अधिक प्रतिस्पर्धी हो गई है।

चुनाव में अहम होगा बीटीआर

असम विधानसभा चुनाव के लिहाज से बीटीआर क्षेत्र को निर्णायक माना जाता है।

यहां की विधानसभा सीटें अक्सर चुनावी परिणाम को प्रभावित करती हैं।

राइजर दल ने जारी की पहली उम्मीदवार सूची

गुवाहाटी। आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर क्षेत्रीय राजनीतिक दल राइजर दल ने अपनी पहली उम्मीदवार सूची जारी कर दी है। पार्टी ने पहली सूची में 11 उम्मीदवारों के नामों की घोषणा की है। जारी सूची के अनुसार 18 नंबर पूर्व ग्वालपारा सीट से अब्दुर रशीद मंडल, जालुकबारी से रमेन चंद्र बरठाकुर, मानाह से अंजन तालुकदार, और दलगांव से अजीजुर रहमान को उम्मीदवार बनाया गया है। इसी प्रकार तेजपुर से अलक नाथ, चिचिबरगांव से दुलाल चंद्र बरुआ, मार्घेरिटा से राहुल छेत्री, डिगबोई से लक्ष्यज्योति गोगोई, मोरियानी से डॉ. ज्ञानश्री बोरा और बोकाखाट से रतन दाओ को पार्टी ने चुनाव मैदान में उतारा है। पार्टी सूत्रों के अनुसार आने वाले दिनों में शेष सीटों के लिए उम्मीदवारों की दूसरी सूची भी जारी की जा सकती है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

'इमाम या विलेन'

वाले शासक। 2025-26 के प्रदर्शनों ने यह भी दिखाया कि ईरान के भीतर उनके प्रति असंतोष कम नहीं था।

भारत के लिए रणनीतिक साझेदार : भारत सरकार का दृष्टिकोण भावनात्मक नहीं, बल्कि रणनीतिक रहा। प्रतिबंधों से पहले ईरान भारत के लिए महत्वपूर्ण तेल आपूर्तिकर्ता था। चाहबहार पोर्ट परियोजना भारत के लिए मध्य एशिया तक पहुंच का द्वार बनी। क्षेत्रीय संतुलन में ईरान की भूमिका भारत की पश्चिम एशिया नीति का अहम हिस्सा रही। इसलिए नई दिल्ली ने मतभेदों के बावजूद संबंध बनाए रखे।

कश्मीर पर विवाद : खामेनेई ने कई बार कश्मीर मुद्दे पर बयान दिए और उसकी तुलना गाजा से की। भारत ने इसे अपने आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप माना और कूटनीतिक स्तर पर कड़ा विरोध दर्ज कराया। यही वह बिंदु था जहां भारत-ईरान संबंधों में संवेदनशीलता बढ़ी।

भारत के शिया समुदाय का एक हिस्सा उन्हें धार्मिक नेतृत्व का प्रतीक मानता रहा। वहीं प्रगतिशील और उदार वर्ग ने उनके शासन की आलोचना की।

इस प्रकार भारत में उनकी छवि दो ध्रुवों के बीच झूलती रही -एक के लिए वे 'रहबर' थे, दूसरे के लिए कठोर शासक।

भारत के लिए अयातुल्ला अली खामेनेई न पूर्ण नायक थे, न पूर्ण खलनायक। वे एक ऐसे पड़ोसी राष्ट्र के शक्तिशाली नेता थे, जिनसे सहयोग भी आवश्यक था और मतभेद भी अनिवार्य।

संयुक्त राष्ट्र ...

में यह संस्था प्रभावी नहीं दिखती, तो इसकी वास्तविक शक्ति क्या है।

सबसे बड़ी समस्या सुरक्षा परिषद की संरचना को लेकर बताई जाती है। सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य-अमेरिका, रूस, चीन, ब्रिटेन और फ्रांस-के पास वीटो शक्ति है। ऐसे में जब इनमें से कोई देश खुद किसी विवाद का पक्ष बन जाता है, तो संयुक्त राष्ट्र के लिए निर्णायक कार्रवाई करना लगभग असंभव हो जाता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि संयुक्त राष्ट्र को प्रभावी बनाना है तो उसकी संरचना और निर्णय प्रक्रिया में बड़े सुधार की जरूरत है। वरना दुनिया के बढ़ते युद्ध और टकराव यह सवाल उठाते रहेंगे कि क्या संयुक्त राष्ट्र अपने मूल उद्देश्य (वैश्विक शांति की रक्षा) को पूरा कर पा रहा है या नहीं।

चतुर कौआ

एक बार की बात है। गर्मी का मौसम था। आसमान में तेज धूप निकल रही थी। एक कौआ बहुत प्यासा था और पानी की तलाश में इधर-उधर उड़ रहा था।

काफी देर उड़ने के बाद उसे एक घर के आंगन में मिट्टी का घड़ा दिखाई दिया। कौआ जल्दी से वहां पहुंचा और घड़े में झांककर देखा।

घड़े में थोड़ा-सा पानी तो था, लेकिन पानी इतना नीचे था कि उसकी चोंच वहां तक नहीं पहुंच पा रही थी।

कौआ बहुत परेशान हुआ, पर उसने हार नहीं मानी। उसने इधर-उधर देखा और उसे पास में छोटे-छोटे कंकड़ दिखाई दिए।

कौए के मन में एक विचार आया। वह एक-एक करके कंकड़ उठाने लगा और उन्हें घड़े में डालने लगा।

जैसे-जैसे कंकड़ घड़े में गिरते गए, पानी ऊपर उठने लगा।

कुछ ही देर में पानी इतना ऊपर आ गया कि कौआ आराम से अपनी चोंच डालकर पानी पी सका।

पानी पीकर उसकी प्यास बुझ गई और वह खुशी-खुशी उड़ गया।

सीख

बुद्धि और धैर्य से हर समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

मजेदार विज्ञान प्रयोग

विज्ञान केवल किताबों में पढ़ने की चीज नहीं है। अगर बच्चे छोटे-छोटे प्रयोग करें तो विज्ञान को समझना बहुत आसान और मजेदार हो जाता है। घर या स्कूल में मिलने वाली साधारण चीजों से भी कई रोचक प्रयोग किए जा सकते हैं। आइए जानते हैं ऐसे 10 सरल विज्ञान प्रयोग, जो बच्चों की जिज्ञासा बढ़ाएंगे।

1. तैरता अंडा

एक गिलास पानी में अंडा डालें तो वह डूब जाता है। लेकिन जब उसी पानी में नमक मिला दिया जाता है तो अंडा ऊपर तैरने लगता है। इससे हमें घनत्व का सिद्धांत समझ में आता है।

2. गुब्बारा और बोतल

एक बोतल के मुंह पर गुब्बारा लगाकर बोतल को गर्म पानी में रखें। कुछ देर में गुब्बारा फूलने लगेगा। इससे पता चलता है कि गर्मी मिलने पर हवा फैलती है।

3. काली मिर्च और साबुन

पानी से भरे कटोरे में काली मिर्च डालें। अब साबुन लगी उंगली से पानी को छुएँ। मिर्च तुरंत किनारे चली जाएगी। यह सतही तनाव का उदाहरण है।

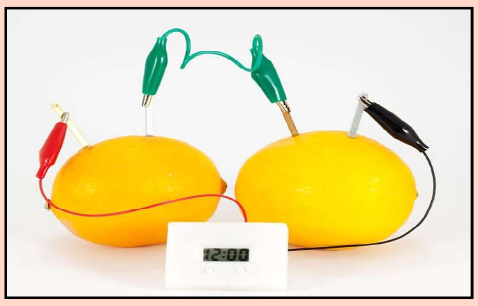

4. नींबू से बिजली

नींबू में तांबे का सिक्का और लोहे की कील लगाकर तार से जोड़ें। इससे छोटी-सी बिजली पैदा की जा सकती है। यह एक सरल बैटरी का सिद्धांत दिखाता है।

5. रंग बदलने वाला पानी

लाल पत्तागोभी के रस में नींबू या बेकिंग सोडा मिलाने से पानी का रंग बदल जाता है। इससे अम्ल और क्षार की पहचान होती है।

6. कागज का पुल

दो किताबों के बीच कागज़ का टुकड़ा रखें और उसके ऊपर सिक्के रखें। यदि कागज़ को मोड़ दिया जाए तो वह ज्यादा वजन सह सकता है। इससे संरचना की मजबूती समझ आती है।

चित्र में रंग भरो

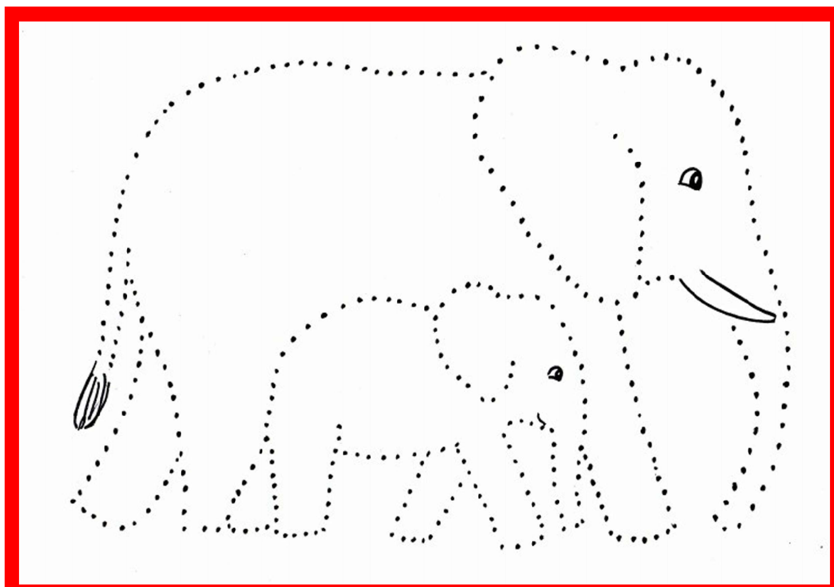

बिंदुओं को मिलाकर चित्र को पूरा करें और रंग भरें।

अज्ञेय : प्रयोगवाद से नई कविता तक की यात्रा

जन जन विचार

...डॉ. मुकेश कुमार
हिंदी विभाग,
चौधरी रणबीर सिंह यूनिवर्सिटी
जींद (हरियाणा)

संगीत में तार सप्तक वह ऊंचाई है जहां स्वर अपनी पराकाष्ठा को प्राप्त करता है; जहां ध्वनि में तीव्रता, विस्तार और अनुगूंज का ऐसा सम्मिलन होता है कि वह श्रोता के अंतर्मन को झंकृत कर देता है। हिंदी कविता के इतिहास में 'तार सप्तक' इसी अर्थ में एक रूपक बनकर उपस्थित होता है । एक ऐसी काव्य-यात्रा का प्रतीक, जिसने परंपरा के स्थिर जल को चीरकर नई राहों का अन्वेषण किया। इस अन्वेषण का सर्वाधिक सशक्त और सजग व्यक्तित्व रहे सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', जिनका जन्म 7 मार्च सन् 1911 ई को उत्तर प्रदेश के कसया (कुशीनगर-देवरिया) में हुआ। वे केवल कवि नहीं, बल्कि आधुनिक हिंदी साहित्य के एक ऐसे वैचारिक स्थापत्यकार थे जिन्होंने काव्य की दिशा, भाषा और संवेदना, इन तीनों को नए आयाम दिए।

अज्ञेय का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे युग निर्माता, कथाकार, कवि, संपादक, चिंतक और सांस्कृतिक पुरुष थे। 'दिनमान', 'प्रतीक', 'सैनिक' और 'नया प्रतीक' जैसी पत्रिकाओं के संपादन से उन्होंने न केवल साहित्यिक प्रवृत्तियों को स्वर दिया, बल्कि एक पूरी पीढ़ी की रचनात्मक चेतना को दिशा प्रदान की। 1946 में 'प्रतीक' पत्रिका का प्रकाशन उनके द्वारा किया जाना हिंदी साहित्य के इतिहास में एक निर्णायक घटना सिद्ध हुआ। इस पत्रिका ने प्रयोगवाद को वैचारिक और सृजनात्मक आधार दिया। प्रयोगवाद, वस्तुतः, कविता को छायावादी आत्मलीनता से निकालकर अनुभव के कठोर धरातल पर स्थापित करने का प्रयत्न था। यह कविता के क्षेत्र में आत्मान्वेषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उद्घोष था। 'प्रयोगवाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने अपने निबंध 'प्रयोगवादी रचनाएं' में किया था, इसमें उनके द्वारा सप्तक की समीक्षा प्रस्तुत की गई थी। वे लिखते हैं, 'पिछले कुछ समय से ही हिंदी काव्य क्षेत्र में कुछ रचनाएं हो रही हैं, जिन्हें कुछ सुलभ शब्द के अभाव में प्रयोगवादी रचना कहा जा सकता है।' हालांकि दूसरे सप्तक की भूमिका में अज्ञेय आचार्य नंददुलारे वाजपेयी की बात का खंडन करते हुए कहते हैं, 'हमें प्रयोगवादी कहना उतना सार्थक या निरर्थक है, जितना हमें 'कवितावादी' कहना।' परंतु 'प्रयोग' शब्द के बार-बार प्रयुक्त होने के कारण तार सप्तकीय कवियों द्वारा लिखी गई कवियों के लिए प्रयोगवादी कविता शब्द अंततः रूढ़ हो गया। इन कवियों ने भाषा, उपमान, शिल्प तथा विषय-वस्तु की दृष्टि से अनेक नवीन प्रयोग किए जिस कारण 'प्रयोगवाद' नाम सार्थक बन पड़ता है। प्रयोगवादी कविताओं में वैयक्तिक सुख-दुःख और संवेदनाओं को व्यक्त करते हुए उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया। शहरी मध्यवर्गीय समाज के जीवन की व्याप्त जटिलता, अतिशय बौद्धिकता, जड़ता, निराशा, कुंठा, अनास्था आदि को अभिव्यक्त किया गया है। दमित काम वासना का पर्याप्त चित्रण भी इन कविताओं में देखने को मिलता है। प्रयोगवादी कविता को जहां एक ओर 'परंपरा से विच्छेद' की कविता कहा गया है, वहीं दूसरी ओर यह अतिशय वैयक्तिता के कारण 'आत्मकेंद्रित' होकर प्रभावहीन होती चली गई। प्रयोगवादी कविता का ही विकसित रूप कालांतर में 'नई कविता' के रूप में हुआ। 1943 में प्रकाशित 'तार सप्तक' ने आधुनिक हिंदी कविता की संरचना को बदल दिया। यह संकलन मात्र सात कवियों का समूह नहीं था, बल्कि एक नई काव्य-दृष्टि का घोषणा-पत्र था। इसमें सम्मिलित कवि थे- रामविलास शर्मा, गजानन माधव मुक्तिबोध, प्रभाकर माचवे, स्वयं अज्ञेय, नेमिचंद्र जैन, गिरिजाकुमार माथुर और भारतभूषण अग्रवाल। इन कवियों को 'नई राहों का अन्वेषी' कहा गया, क्योंकि उन्होंने काव्य के स्थापित प्रतिमानों को चुनौती दी। यह चुनौती किसी विद्रोही आवेश से अधिक एक सजग बौद्धिकता का परिणाम थी।

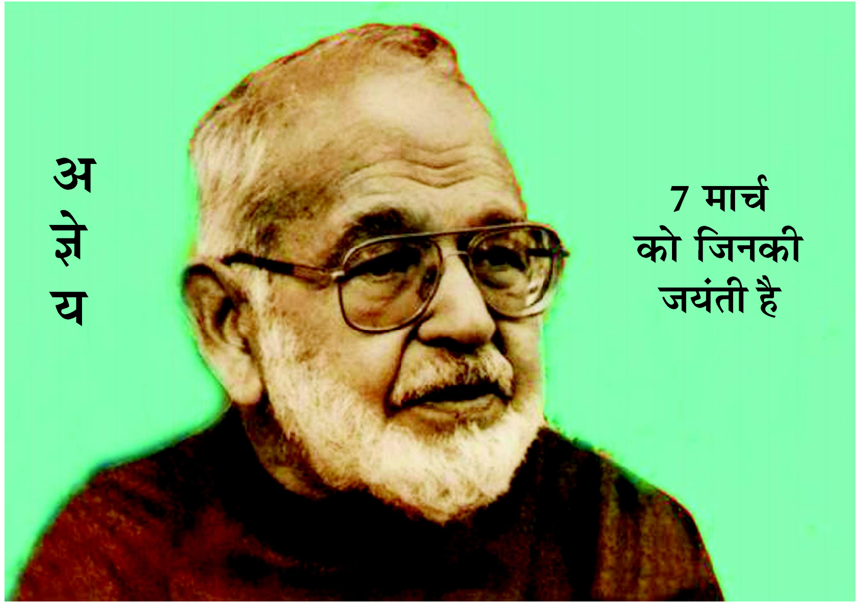

अज्ञेय का रचनात्मक संसार अत्यंत व्यापक है। 'शेखर : एक जीवनी' हिंदी उपन्यास परंपरा में आत्मचेतना और मनोविश्लेषण का अद्वितीय उदाहरण है। 'नदी के द्वीप' और 'अपने-अपने अजनबी' में आधुनिक मनुष्य की विखंडित चेतना और संबंधों की जटिलता का चित्रण है। काव्य में 'बावरा अहेरी', 'आंगन के पार द्वार', 'असाध्य वीणा' और 'कितनी नावों में कितनी बार' जैसी कृतियां उनकी काव्य-यात्रा के विभिन्न सोपानों को उद्घाटित करती हैं। 'असाध्य वीणा' में प्रतीक और मिथक के माध्यम से साधना और कला के द्वंद्व को जिस रूप में व्यक्त किया गया है, वह आधुनिक हिंदी कविता की ऊंचाइयों में गिना जाता है।

1952 में पटना रेडियो से 'नई कविता' की घोषणा ने साहित्यिक परिदृश्य को एक नई दिशा दी। 1954 में इलाहाबाद से 'नई कविता' का प्रकाशन हुआ, जिसके संपादक जगदीश गुप्त और रामस्वरूप चतुर्वेदी थे। यह आंदोलन प्रयोगवाद का ही विकसित रूप था, किंतु इसमें भाषा और संवेदना की दृष्टि से एक अधिक स्पष्ट परिवर्तन दिखाई देता है। जहां प्रयोगवादी कविता में छायावादी प्रभाव की हल्की छाया देखी जा सकती है, वहीं नई कविता में यह प्रभाव लगभग समाप्त हो जाता है। नई कविता ने जीवन की ठोस यथार्थपरकता, सामाजिक विडंबनाओं और 'लघु मानव' की प्रतिष्ठा को केंद्र में रखा। प्रयोगवादी कविता की घुटन, पीड़ा और संत्रास -जो आधुनिक जीवन की विसंगतियों से उपजे थे - नई कविता में एक व्यापक सामाजिक बोध में परिणत हुए। यह कविता आत्मसंघर्ष से निकलकर सामूहिक अनुभव की भूमि पर आई। 'लघु मानव'-जो आधुनिक औद्योगिक और शहरी जीवन में उपेक्षित था वह नई कविता का नायक बना। इस नायक में न तो छायावादी स्वप्नदर्शिता थी और न ही रोमानी उच्छ्वास, उसमें संघर्ष था, विडंबना थी और एक सजग चेतना थी। 'दूसरा सप्तक' में धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, शमशेर बहादुर सिंह, रघुवीर सहाय, भवानीप्रसाद मिश्र, हरिनारायण व्यास और शकुंतला माथुर जैसे कवियों का समावेश इस आंदोलन के विस्तार का संकेत देता है। 'तीसरा सप्तक' और 'चौथा सप्तक' तक आते-आते यह प्रवृत्ति एक सशक्त परंपरा का रूप ले चुकी थी। कुंवर नारायण, केदारनाथ सिंह, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना आदि कवियों ने इस परंपरा को और समृद्ध किया। इस प्रकार 'तार सप्तक' से प्रारंभ हुई यात्रा आधुनिक हिंदी कविता की मुख्यधारा बन गई।

अज्ञेय के संदर्भ में डॉ. बच्चन सिंह का यह कथन उल्लेखनीय है कि 'अज्ञेय संस्कारी कवि हैं, भाषा के प्रति-उसमें भी शब्दों के प्रति।' यह कथन अज्ञेय की भाषिक सजगता और शिल्प-संवेदनशीलता को रेखांकित करता है। अज्ञेय के यहां शब्द मात्र संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि सृजन की इकाई हैं। वे शब्दों को तराशते हैं, उन्हें उनके सूक्ष्म अर्थ-छायाओं सहित प्रयोग करते हैं। उनकी कविता में मौन भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उच्चारित शब्द। यह मौन, दरअसल, अनुभव की गहराई का द्योतक है।

उनकी काव्य-दृष्टि में व्यक्तित्व की स्वतंत्रता और आत्मान्वेषण का विशेष महत्व है। वे मानते थे कि कविता किसी विचारधारा की दासी नहीं हो सकती, उसे अपने अनुभव की प्रामाणिकता पर आधारित होना चाहिए। यही कारण है कि वे प्रगतिवाद की सामूहिक वैचारिकता से भी एक दूरी बनाए रखते हैं। उनका आग्रह था कि कवि का दायित्व सत्य की खोज है , वह सत्य जो व्यक्तिगत अनुभव से उपजता है, किंतु सार्वभौमिक संवेदना को स्पर्श करता है। छायावाद, प्रयोगवाद और नई कविता-इन तीनों प्रवृत्तियों के बीच अज्ञेय एक सेतु के रूप में दिखाई देते हैं। उन्होंने छायावाद की सौंदर्य-चेतना को आत्मसात किया, प्रयोगवाद के माध्यम से उसे तोड़ा और नई कविता में उसे यथार्थ की भूमि पर पुनर्स्थापित किया। यह रूपांतरण किसी एक क्षण में नहीं हुआ; यह एक दीर्घ साधना और आत्मसंघर्ष का परिणाम था। अज्ञेय की कविता में प्रकृति का चित्रण भी विशिष्ट है। वह केवल सौंदर्य का दृश्य नहीं, बल्कि मनुष्य के अंतर्मन का प्रतीक बनकर आता है। नदी, द्वीप, नाव, अहेरी, वीणा-ये सभी प्रतीक जीवन के व्यापक अर्थों की ओर संकेत करते हैं। 'कितनी नावों में कितनी बार' शीर्षक ही आधुनिक जीवन की अनिश्चितता और बहुविकल्पी स्थिति को व्यक्त करता है। आधुनिक हिंदी कविता के इतिहास में 'तार सप्तक' को एक क्रांतिकारी घटना के रूप में देखा जाता है। इसने कविता को नई संवेदना, नई भाषा और नए शिल्प की ओर अग्रसर किया। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि यदि 'तार सप्तक' न होता, तो हिंदी कविता का आधुनिक स्वरूप भिन्न होता। अज्ञेय ने न केवल एक काव्य-संकलन संपादित किया, बल्कि एक सांस्कृतिक आंदोलन का सूत्रपात किया। प्रयोगवादियों ने कविताओं के शिल्प को परंपरागत काव्य से भिन्न बनाने का भरसक प्रयास किया। पुराने प्रतीकों और उपमानों के नवीन अर्थ खोजे गए और प्रयोगवादियों द्वारा बहुत से नवीन प्रतीक और उपमान भी कविता को दिए गए-

1. प्यार का बल्ब फ्यूज हो गया।
2. ऑपरेशन थिएटर सी जो हर काम करते हुए भी चुप है।
3. गार्ड की रोशनी सा पीछे गुमसुम सा शुक्र तारा जा रहा है ।

अतः अज्ञेय का योगदान केवल उनके व्यक्तिगत कृतित्व में नहीं, बल्कि उस व्यापक साहित्यिक चेतना में निहित है जिसे उन्होंने जन्म दिया। उन्होंने कविता को आत्मान्वेषण का माध्यम बनाया, भाषा को प्रयोग की भूमि दी और कवि को स्वतंत्र चिंतन का साहस प्रदान किया। प्रयोगवादी कविता से नई कविता तक की यात्रा में जो 'लघु मानव' प्रतिष्ठित हुआ, वह अज्ञेय की संवेदना और दृष्टि का ही विस्तार है।

टाइगर प्रिंसेस डॉ. लतिका नाथ

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

भारत में वन्यजीव संरक्षण की बात हो और डॉ. लतिका नाथ का नाम न आए, ऐसा संभव नहीं है। दिल्ली-आधारित संरक्षण विशेषज्ञ और वन्यजीव फोटोग्राफर डॉ. लतिका नाथ को 'टाइगर प्रिंसेस' के नाम से जाना जाता है। वे भारत की पहली महिला हैं जिन्होंने टाइगर कंजर्वेशन (बाघ संरक्षण) में पीएचडी हासिल की। डॉ. लतिका नाथ केवल एक वैज्ञानिक नहीं, बल्कि प्रकृति की सच्ची संरक्षक हैं। उन्होंने यह साबित किया कि जुनून, समर्पण और साहस के साथ कोई भी व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण में बड़ा बदलाव ला सकता है। उनकी कहानी हमें यह सिखाती है कि जंगल और वन्यजीव केवल देखने की चीज़ नहीं, बल्कि हमारी साझा विरासत हैं।

डॉ. लतिका नाथ ने बाघों के संरक्षण और उनके प्राकृतिक आवास पर गहन शोध किया। वे टाइगर कंजर्वेशन में पीएचडी करने वाली पहली महिला हैं। उनका काम केवल अकादमिक शोध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने

जंगलों में रहकर बाघों के व्यवहार, उनके संघर्ष और मानव-वन्यजीव

डॉ. लतिका नाथ को भारत की 'टाइगर प्रिंसेस' कहा जाता है। उनकी बाघों के प्रति गहरी लगन और समर्पण पर एक विशेष डॉक्यूमेंट्री भी बनी थी, जिसे नेशनल ज्योग्राफिक ने प्रस्तुत किया। इस डॉक्यूमेंट्री में उन्होंने बाघों की शानदार भव्यता और उनकी जंगली आज़ादी के प्रति अपने प्रेम को साझा किया। वे कहती हैं, 'कुछ इतना खूबसूरत, इतना अनछुआ और जंगली रूप में प्रकृति में मौजूद हो-यही रोमांच मुझे बाघों से प्यार करने पर मजबूर करता है।' जंगलों से महासागरों और ध्रुवीय क्षेत्रों तक का सफर डॉ. लतिका नाथ केवल बाघों तक सीमित नहीं रहीं। उन्होंने जंगलों, महासागरों और ध्रुवीय क्षेत्रों की यात्राएं कीं, ताकि यह समझ सकें कि पृथ्वी पर जीवन एक-दूसरे से कैसे जुड़ा हुआ है। उनके अनुसार, हर प्रजाति, हर आवास और हर इंसान एक अदृश्य धागे से बंधा है। यही सोच उनकी संरक्षण की फिलोसफी को खास बनाती है। वन्यजीव फोटोग्राफर और स्टोरीटेलर डॉ. लतिका नाथ खुद को 'स्टोरीटेलर ऑफ द वाइल्ड' कहती हैं। वे अपनी फोटोग्राफी और लेखन के जरिए लोगों को यह समझाने की कोशिश करती हैं कि प्रकृति की रक्षा क्यों जरूरी है। उनकी तस्वीरें केवल जानवरों की सुंदरता नहीं दिखातीं, बल्कि उनके अस्तित्व के संघर्ष को भी सामने लाती हैं।

बिना तले बनाएं ओट्स गुजिया

अगर आप मिठाई का स्वाद भी लेना चाहते हैं और हेल्थ से समझौता भी नहीं करना चाहते, तो ओट्स और ड्राई फ्रूट्स की बेक्ड गुजिया एक शानदार विकल्प है।

गुजिया बनाने के लिए

सामग्री

1 कप ओट्स पाउडर, मिक्सर में पीस लें

आधा कप गेहूं का आटा, बाइंडिंग के लिए

2 बड़े चम्मच देसी घी, चुटकीभर नमक

जरूरत अनुसार गुनगुना दूध या पानी

भरावन के लिए

आधा कप बारीक कटा बादाम-काजू-पिस्ता, 2 बड़े चम्मच किशमिश, ¼ कप सूखा नारियल बूरा, 2-3 बड़े चम्मच खजूर पेस्ट या शहद, आधा छोटा चम्मच इलायची पाउडर

विधि : आटा तैयार करें - ओट्स पाउडर और गेहूं का आटा मिलाएं। घी डालकर हाथों से अच्छी तरह मिक्स करें। धीरे-धीरे दूध डालकर थोड़ा सख्त आटा गूंथ लें। 5 मिनट ढककर रख दें।

भरावन तैयार करें : एक पैन में हल्का घी गर्म करें। ड्राई फ्रूट्स और नारियल को 1-2 मिनट हल्का भूनें। आंच बंद करके खजूर पेस्ट और इलायची मिलाएं। मिश्रण ठंडा होने दें।

गुजिया आकार दें : आटे की छोटी लोइयां बेलें। बीच में 1-2 चम्मच भरावन रखें। किनारों पर पानी लगाकर मोड़ें। कांटे से दबाकर सील करें

बेकिंग प्रक्रिया : ओवन को 180°C पर प्रीहीट करें। गुजिया को बेकिंग ट्रे पर रखें। ऊपर से हल्का घी या दूध ब्रश करें। 15-20 मिनट तक बेक करें या सुनहरा होने तक। बीच में एक बार पलट दें ताकि दोनों तरफ बराबर बेक हो।

ब्यूटी टिप्स

1. रोज़ाना स्किन केयर रूटीन

स्वस्थ त्वचा के लिए रोज़ ये तीन काम ज़रूर करें-

दिन में दो बार चेहरा धोएँ : सुबह और रात को, ताकि धूल-मिट्टी और तेल हट जाए।

मॉइस्चराइज़र लगाएँ : इससे त्वचा मुलायम और हाइड्रेटेड रहती है।

सनस्क्रीन का उपयोग करें : धूप से होने वाले नुकसान और झुर्रियों से बचाता है।

सुझाव : अपनी त्वचा के प्रकार (ऑयली, ड्राई या मिक्स) के अनुसार ही उत्पाद चुनें।

2. चेहरे की प्राकृतिक चमक के लिए

घर पर मिलने वाली चीज़ों से भी चेहरे की चमक बढ़ाई जा सकती है:-

हल्दी + शहद फेस पैक : त्वचा को चमकदार बनाता है।

मुल्तानी मिट्टी : अतिरिक्त तेल हटाकर त्वचा को ठंडक देती है।

एलोवेरा जेल : त्वचा को नमी और ताजगी देता है।

नींबू + शहद : चेहरे के दाग-धब्बे हल्के करने में मदद करता है।

रील देखने की लत का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

डिजिटल युग में सोशल मीडिया पर रील्स या शॉर्ट वीडियो देखना लोगों की आदत बन गई है। कुछ सेकेंड के ये मनोरंजक वीडियो तुरंत आकर्षित करते हैं और व्यक्ति को लगातार स्क्रीन पर बनाए रखते हैं। धीरे-धीरे यह आदत लत का रूप ले सकती है, जो शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। इस लत से बचने के लिए डिजिटल डिटॉक्स और सोशल मीडिया से दूरी बनाना जरूरी है।

सोशल मीडिया पर लगातार कई घंटों तक रील्स देखना मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। रील देखने की लत के कारण फोकस में कमी आ सकती है, नींद पूरी नहीं हो पाती, व्यक्ति समाज से कट जाता है। सोशल मीडिया पर बिंज वॉचिंग से बचने के लिए अपने स्क्रीन टाइम को किताब पढ़ने, खेलने या कोई हॉबी डेवलप करने में लगाने का विकल्प चुना जा सकता है।

रील देखने की लत के प्रमुख नुकसान

नींद खराब होना : देर रात तक मोबाइल चलाने से नींद पूरी नहीं होती। मोबाइल की नीली रोशनी नींद के हार्मोन मेलाटोनिन को प्रभावित करती है। **लक्षण :** देर से सोना, सुबह थकान, सिरदर्द, चिड़चिड़ापन।

शारीरिक समस्याएं : लंबे समय तक मोबाइल देखने से गर्दन और कंधों में दर्द, कमर दर्द, आंखों में जलन या धुंधलापन, सिरदर्द, शारीरिक गतिविधि कम होने से वजन बढ़ना।

अटेंशन स्पैन कम होना : रील्स बहुत छोटे और तेज कंटेंट होते हैं, इसलिए दिमाग तुरंत संतुष्टि का आदी हो जाता है। इसके कारण पढ़ाई या काम में ध्यान नहीं लगता, लंबा लेख या किताब पढ़ना मुश्किल लगता है, बार-बार मोबाइल चेक करने की आदत बन जाती है।

एकाग्रता में कमी : नोटिफिकेशन और लगातार स्क्रॉलिंग से गहरा फोकस कमजोर हो जाता है। पढ़ाई या काम में देरी और प्रदर्शन में गिरावट आ सकती है।

मानसिक स्वास्थ्य पर असर : रील्स में दिखने वाली 'परफेक्ट लाइफ' देखकर लोग अपनी जिंदगी से तुलना करने लगते हैं। इससे तनाव, चिंता, अवसाद, आत्मविश्वास में कमी की समस्याएं होती हैं।

सामाजिक अलगाव : परिवार और दोस्तों के साथ समय कम बिताना, बातचीत में रुचि कम होना, अकेले रहना पसंद करना

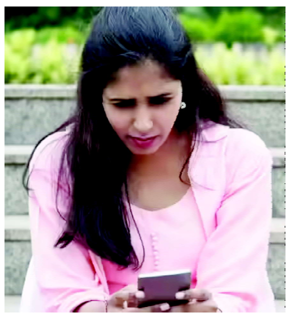

रील्स की लत से बचने के उपाय

सोने से कम से कम 1 घंटे पहले मोबाइल बंद करें

खाने या परिवार के समय फोन का उपयोग न करें

स्क्रीन टाइम लिमिट तय करें

हर 30-40 मिनट में ब्रेक लें

अच्छी आदतें अपनाएं

किताब पढ़ें

योग या व्यायाम करें

खेलें

कोई नई हॉबी सीखें

अनावश्यक नोटिफिकेशन बंद करें

अगर लत ज्यादा हो जाए तो काउंसलर या मनोवैज्ञानिक से सलाह लें।

ईरान-इजरायल युद्ध से असम की चाय पर संकट

जन जन विचार
...✍ जोरहाट

पश्चिम एशिया में जारी युद्ध और क्षेत्रीय अस्थिरता का असर अब असम के चाय उद्योग पर भी पड़ने की आशंका जताई जा रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि युद्ध लंबा चला और प्रमुख समुद्री व्यापार मार्ग प्रभावित हुए, तो असम से होने वाली चाय की विदेशी बिक्री (निर्यात) को भारी झटका लग सकता है।

भारतीय चाय मंडल (टी बोर्ड) के पूर्व अध्यक्ष प्रभात बेजबरुवा के अनुसार पिछले वर्ष भारत से लगभग 28 करोड़ किलोग्राम चाय विदेशों को भेजी गई थी। इसमें से करीब 40 प्रतिशत यानी लगभग

भारत का कुल चाय उत्पादन : 133 करोड़ किग्रा
असम का उत्पादन : 68 करोड़ किग्रा
भारत का कुल निर्यात : 28 करोड़ किग्रा
पश्चिम एशिया को निर्यात : 10 करोड़ किग्रा

10 करोड़ किलोग्राम चाय पश्चिम एशिया के देशों में जाती है।

उन्होंने बताया कि इराक, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात, ओमान और जॉर्डन भारतीय चाय के प्रमुख खरीदार हैं। यदि इस क्षेत्र में अस्थिरता बनी रहती है, तो इन देशों को चाय भेजने की व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हो सकती है।

सबसे बड़ी चिंता होर्मुज जलडमरूमध्य को लेकर है, जो दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार मार्गों में से एक है। यदि यह मार्ग लंबे समय तक बंद या बाधित रहा, तो पश्चिम एशिया के कई देशों तक चाय की खेप पहुंचाना कठिन हो जाएगा।

हालांकि बेजबरुवा ने कहा कि ईरान को सीधे भेजी जाने वाली चाय की मात्रा अपेक्षाकृत कम है- पिछले वर्ष लगभग 1 करोड़ 20 लाख किलोग्राम। लेकिन पूरे पश्चिम एशिया में अस्थिरता का असर कुल निर्यात पर अवश्य पड़ेगा।

मौसम के कारण उत्पादन पर भी चिंता

भारतीय चाय मंडल (टी बोर्ड) के पूर्व अध्यक्ष प्रभात बेजबरुवा ने बताया कि इस वर्ष असम में चाय उत्पादन की शुरुआत कुछ धीमी रही है। पर्याप्त वर्षा नहीं होने से बागानों में चिंता बढ़ी है। असम में चाय उत्पादन का नया मौसम अप्रैल से शुरू होता है और मार्च, अप्रैल तथा मई के महीने उद्योग के लिए सबसे महत्वपूर्ण माने जाते हैं। यदि आने वाले दिनों में अच्छी वर्षा और अनुकूल तापमान रहा, तो उत्पादन में सुधार संभव है।

ईरान में विद्रोह भड़काने की तैयारी!

अमेरिकी गुप्तचर एजेंसी की योजना

कुर्द सशस्त्र समूहों को हथियार देने की चर्चा अभियान का आधार ईरान-इराक सीमा क्षेत्र

जन जन विचार
...✍ वॉशिंगटन

मध्य-पूर्व में जारी युद्ध के बीच अब ईरान के भीतर अस्थिरता पैदा करने की योजना की खबरें सामने आ रही हैं। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार अमेरिका की गुप्तचर संस्था केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी (सीआईए) ईरान में जनविद्रोह भड़काने की रणनीति पर काम कर रही है।

बताया जा रहा है कि इस योजना के तहत अमेरिका ईरान-इराक सीमा पर सक्रिय कुर्द सशस्त्र समूहों को हथियार और सैन्य सहायता देने की संभावना पर विचार कर रहा है। इसका उद्देश्य ईरान की सुरक्षा व्यवस्था को कमजोर करना और देश के भीतर विरोध को बढ़ावा देना बताया जा रहा है।

सूत्रों के अनुसार अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरानी कुर्द संगठन ईरानी कुर्दिस्तान की लोकतांत्रिक पार्टी (केडीपीआई) के नेता मुस्तफा हिजरी से भी बातचीत की है। यह संगठन लंबे समय से ईरान की सत्ता के खिलाफ सक्रिय रहा है।

रिपोर्टों के मुताबिक यदि यह योजना आगे बढ़ती है तो कुर्द लड़ाके पश्चिमी ईरान के सीमावर्ती क्षेत्रों में सैन्य कार्रवाई शुरू कर सकते हैं। इससे ईरानी सुरक्षा बलों पर दबाव बढ़ेगा और बड़े शहरों में विरोध प्रदर्शनों को हवा मिल सकती है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि ऐसी योजना पर अमल होता है तो इससे पूरे मध्य-पूर्व में तनाव और बढ़ सकता है तथा युद्ध का दायरा और व्यापक हो सकता है।

श्रीलंका तट के पास अमेरिका ने डुबोया ईरान का युद्धपोत

जन जन विचार
...✍ वॉशिंगटन/कोलंबो

मध्य-पूर्व में बढ़ते तनाव के बीच हिंद महासागर में एक बड़ा सैन्य घटनाक्रम सामने आया है। अमेरिकी रक्षा मंत्रालय ने पुष्टि की है कि अमेरिका की पनडुब्बी ने टॉरपीडो दागकर ईरान के एक युद्धपोत को डुबो दिया। बताया जा रहा है कि यह युद्धपोत भारत से लौटते समय श्रीलंका के समुद्री क्षेत्र के पास डूब गया।

अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ और सैन्य अधिकारियों के अनुसार यह हमला एक तेज आक्रमण क्षमता वाली पनडुब्बी से किया गया, जिसमें एमके-48 टॉरपीडो का इस्तेमाल हुआ। इस हमले में ईरान का मौज श्रेणी का युद्धपोत 'आईआरआईएस डेना' पूरी तरह समुद्र में डूब गया।

विशेषज्ञों के अनुसार समुद्र में किसी सतही युद्धपोत को पनडुब्बी से डुबोने की यह घटना लगभग 80 वर्षों बाद सामने आई है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इस तरह की कार्रवाई बेहद दुर्लभ मानी जाती है, इसलिए इस हमले को सैन्य दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। घटना के बाद श्रीलंका की नौसेना ने अपने तट के पास बचाव अभियान चलाया और कई नाविकों को सुरक्षित निकालने की कोशिश की। हालांकि जहाज पर सवार कई लोग अब भी लापता बताए जा रहे हैं।

विश्लेषकों का मानना है कि यह कार्रवाई ईरान और अमेरिका के बीच बढ़ते सैन्य टकराव को और तीखा कर सकती है।

तालिबान के सुप्रीम लीडर को मारने की तैयारी में पाकिस्तान

जन जन विचार
...✍ इस्लामाबाद/काबुल

पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच बढ़ते टकराव ने अब खतरनाक मोड़ ले लिया है। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार पाकिस्तानी सेना ने संकेत दिया है कि यदि पुख्ता खुफिया सूचना मिलती है तो वह अफगान तालिबान के सर्वोच्च नेता हिबतुल्लाह अखुंदजादा सहित संगठन के शीर्ष नेतृत्व को भी निशाना बनाने से पीछे नहीं हटेगी।

सूत्रों के मुताबिक पाकिस्तान ने हाल के दिनों में अफगानिस्तान के अंदर कई स्थानों पर हवाई हमले किए हैं। इन हमलों का दायरा राजधानी काबुल से लेकर कंधार तक बताया जा रहा है, जहां तालिबान नेतृत्व के मौजूद रहने की बात कही जाती है।

पाकिस्तान का आरोप है कि अफगानिस्तान की जमीन से सक्रिय तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान जैसे उग्रवादी संगठन लगातार उसके

सुरक्षा बलों और नागरिक ठिकानों को निशाना बना रहे हैं। इस्लामाबाद का कहना है कि इन समूहों को कमजोर करने और उनकी गतिविधियों को रोकने के लिए उसे सीमापार सैन्य कार्रवाई करनी पड़ी है।

पाकिस्तानी अधिकारियों का कहना है कि यह अभियान तब तक जारी रहेगा, जब तक काबुल यह स्पष्ट नहीं कर देता कि वह पाकिस्तान विरोधी संगठनों के साथ खड़ा है या उनके खिलाफ कदम उठाएगा। सुरक्षा सूत्रों के अनुसार यदि हालात ऐसे ही बने रहे तो कार्रवाई का दायरा तालिबान के राजनीतिक और सैन्य नेतृत्व तक भी बढ़ सकता है। इससे दोनों देशों के रिश्ते और बिगड़ सकते हैं तथा पूरे क्षेत्र में अस्थिरता और बढ़ने की आशंका है।

जेईई के बिना भी आईआईटी में पढ़ाई का मौका

एआई, डेटा विज्ञान, रोबोटिक्स और एयरोस्पेस जैसे पाठ्यक्रमों में सीधे प्रवेश

जन जन विचार ...✍ नई दिल्ली

इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) में प्रवेश का सपना देखने वाले छात्रों के लिए राहत की खबर है। अब कुछ विशेष पाठ्यक्रम ऐसे भी हैं जिनमें संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) के बिना भी प्रवेश लिया जा सकता है। इन पाठ्यक्रमों को उन छात्रों और कार्यरत पेशेवरों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, जो नई तकनीकों में कौशल विकसित करना चाहते हैं।

आईआईटी दिल्ली का रोबोटिक्स कार्यक्रम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली ने रोबोटिक्स विषय पर पांच माह का एक कार्यकारी प्रमाणपत्र कार्यक्रम शुरू किया है। यह लघु अवधि के पाठ्यक्रम में छात्रों को संस्थान के अध्यापकों से सीखने का अवसर मिलेगा। यह कार्यक्रम 14 मार्च 2026 से शुरू होगा और इच्छुक अभ्यर्थी संस्थान की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर पंजीकरण कर सकते हैं।

आईआईटी मद्रास का डेटा विज्ञान पाठ्यक्रम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास ने डेटा विज्ञान एवं अनुप्रयोग विषय में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम शुरू किया है। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए अभ्यर्थी का किसी मान्यताप्राप्त संस्थान से स्नातक होना आवश्यक है। इसमें पंजीकरण की अंतिम तिथि 30 मई 2026 निर्धारित की गई है।

आईआईटी बॉम्बे का वाहन विश्लेषण पाठ्यक्रम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान बॉम्बे ने 'स्वयं' मंच पर वाहन विश्लेषण एवं अभिकल्प विषय में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम शुरू किया है। इसमें छात्र और पेशेवर दोनों भाग ले सकते हैं। इस पाठ्यक्रम के लिए पंजीकरण की अंतिम तिथि 27 फरवरी 2026 है और परीक्षा 18 अप्रैल 2026 को आयोजित की जाएगी।

आईआईटी खड़गपुर का एयरोस्पेस पाठ्यक्रम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर ने एयरोस्पेस संरचना विश्लेषण विषय पर विशेष पाठ्यक्रम शुरू किया है। इसमें स्नातक, स्नातकोत्तर छात्र और पेशेवर भी भाग ले सकते हैं। पाठ्यक्रम में एयरोस्पेस की अवधारणा, संरचना विश्लेषण और लोच जैसे विषय पढ़ाए जाएंगे। इसमें पंजीकरण की अंतिम तिथि 27 फरवरी 2026 तय की गई है।

बिना लिखित परीक्षा सेना में लेफ्टिनेंट बनने का मौका

एनसीसी स्पेशल एंट्री से युवाओं के लिए बड़ा अवसर

जन जन विचार ...✍ नई दिल्ली

देश सेवा का सपना देखने वाले युवाओं के लिए भारतीय सेना ने बड़ा मौका दिया है। भारतीय सेना ने एनसीसी स्पेशल एंट्री स्कीम के तहत आवेदन आमंत्रित किए हैं। खास बात यह है कि इस भर्ती में कोई लिखित परीक्षा नहीं होगी, बल्कि उम्मीदवारों का चयन सीधे एसएसबी इंटरव्यू के आधार पर किया जाएगा।

इस भर्ती के लिए अविवाहित युवक और युवतियां दोनों आवेदन कर सकते हैं। इच्छुक उम्मीदवार भारतीय सेना की आधिकारिक वेबसाइट joinindianarmy.nic.in पर जाकर 16 मार्च 2026 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

इस भर्ती के लिए उम्मीदवार का किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक होना जरूरी है। साथ ही उम्मीदवार के पास एनसीसी का 'सी' सर्टिफिकेट कम से कम 'बी' ग्रेड के साथ होना चाहिए। आवेदक की आयु 1 जुलाई 2026 को 19 से 25 वर्ष के बीच होनी चाहिए।

भारतीय सेना ने इस कोर्स के लिए कुल 170 पद अधिसूचित किए हैं। इनमें से 63 पद सामान्य एनसीसी उम्मीदवारों के लिए और 7 पद सेना के बैटल कैजुअल्टी जवानों के वार्ड्स के लिए आरक्षित हैं।

इग्नू ने पंजीकरण की अंतिम तिथि बढ़ाई

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) ने जनवरी 2026 सत्र के ऑनलाइन और ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग (ओडीएल) कार्यक्रमों के लिए पंजीकरण और पुन: पंजीकरण की अंतिम तिथि बढ़ा दी है। अब अभ्यर्थी 15 मार्च तक आवेदन कर सकते हैं। इच्छुक छात्र इग्नू समर्थ पोर्टल पर जाकर ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया पूरी करें।

विश्वविद्यालय ने पहली बार आवेदन करने वाले और दोबारा पंजीकरण करने वाले दोनों तरह के छात्रों को निर्धारित लॉगिन लिंक के माध्यम से प्रक्रिया पूरी करने की सलाह दी है। आवेदन से पहले सभी जरूरी दस्तावेज स्कैन कर तैयार रखना आवश्यक है। आवेदन शुल्क का भुगतान केवल ऑनलाइन माध्यम से क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड या नेट बैंकिंग द्वारा किया जा सकेगा।

आधार ऑपरेटर-सुपरवाइजर के 252 पदों पर निकली भर्ती

जन जन विचार ...✍ नई दिल्ली

देशभर के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में आधार ऑपरेटर एवं पर्यवेक्षक के पदों पर भर्ती प्रक्रिया चल रही है। इच्छुक और पात्र उम्मीदवार 10 मार्च तक आवेदन कर सकते हैं। आवेदन प्रक्रिया पूरी तरह ऑनलाइन रखी गई है और अभ्यर्थी आधिकारिक पोर्टल csc.gov.in/ask पर जाकर आवेदन कर सकते हैं।

इस भर्ती अभियान के माध्यम से देशभर में कुल 252 पदों पर नियुक्ति की जाएगी।

पात्रता और योग्यता : अभ्यर्थी का 12वीं / औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) / डिप्लोमा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। उम्मीदवार को कंप्यूटर का बुनियादी ज्ञान होना चाहिए। न्यूनतम आयु 18 वर्ष निर्धारित की गई है।

आवेदन की प्रक्रिया : आवेदन करने के लिए अभ्यर्थियों को सबसे पहले आधिकारिक पोर्टल csc.gov.in/ask पर जाना होगा। इसके बाद अपने राज्य का चयन करके अभी आवेदन करें विकल्प पर क्लिक करना होगा। आवेदन प्रपत्र में मांगी गई जानकारी भरकर पंजीकरण करना होगा और आवश्यक विवरण दर्ज करके प्रपत्र को पूर्ण करना होगा। अंत में भरे हुए आवेदन प्रपत्र का प्रिंट निकालकर सुरक्षित रखना चाहिए।

चयन प्रक्रिया : उम्मीदवारों का चयन मुख्य रूप से शैक्षिक योग्यता के आधार पर किया जाएगा। आवश्यकता पड़ने पर अभ्यर्थियों को साक्षात्कार या बातचीत के लिए बुलाया जा सकता है। इसके बाद दस्तावेज सत्यापन प्रक्रिया पूरी होने पर अंतिम चयन सूची जारी की जाएगी। अधिक जानकारी के लिए अभ्यर्थी आधिकारिक पोर्टल पर जाकर विस्तृत विवरण देख सकते हैं।

भाषा सुधारें, अभिव्यक्ति निखारें

जन जन विचार ...✍ रामेश्वर शर्मा

आज के समय में अच्छी हिंदी बोलना और लिखना केवल भाषा का ज्ञान नहीं, बल्कि व्यक्तित्व की पहचान भी बन गया है। विशेषकर विद्यार्थियों, शिक्षकों, पत्रकारों और लेखन से जुड़े लोगों के लिए शुद्ध और प्रभावी हिंदी अत्यंत आवश्यक है। हिंदी केवल संवाद का माध्यम ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और विचारों को अभिव्यक्त करने का सशक्त साधन भी है।

पढ़ने की आदत से बनती है भाषा मजबूत : हिंदी सुधारने का सबसे आसान तरीका है नियमित रूप से पढ़ना। अच्छे हिंदी समाचार पत्र, साहित्यिक पत्रिकाएं और महान लेखकों की रचनाएं पढ़ने से भाषा की समझ विकसित होती है। प्रेमचंद, रामधारी सिंह दिनकर, हरिवंश राय बच्चन जैसे साहित्यकारों की रचनाएं न केवल प्रेरणा देती हैं बल्कि शब्दों की शक्ति का भी परिचय कराती हैं।

रोज थोड़ा लिखने की आदत डालें : भाषा में निपुणता केवल पढ़ने से नहीं, बल्कि लिखने से भी आती है। यदि विद्यार्थी प्रतिदिन किसी विषय पर कुछ पंक्तियां लिखने की आदत डालें, तो धीरे-धीरे उनकी भाषा शैली में सुधार आने लगता है। डायरी लिखना, छोटे लेख या समाचार लिखना इस दिशा में बहुत उपयोगी अभ्यास है।

शब्द भंडार बढ़ाना भी जरूरी : अच्छी हिंदी के लिए समृद्ध शब्द भंडार होना आवश्यक है। प्रतिदिन कुछ नए शब्द सीखने और उन्हें वाक्यों में प्रयोग करने से भाषा प्रभावशाली बनती है। इससे व्यक्ति अपने विचारों को अधिक स्पष्ट और सुंदर ढंग से व्यक्त कर पाता है। हिंदी लिखते समय शुद्ध वर्तनी पर विशेष ध्यान देना चाहिए। गलत वर्तनी से लेख का प्रभाव कम हो जाता है।

Teachers Required

Scholar's Global School

A. K. Dev Path, Katahbari, Guwahati

Requires qualified and dedicated teachers for **English, Mathematics, General Science Social Science, Art & Craft and Montessori**

Eligibility: Graduate / Postgraduate in the relevant subject.

Interested candidates may send their CV/ Resume or contact us at the following number-

9435592931 Admission Open for new session

एलन का रिकॉर्ड शतक, न्यूजीलैंड फाइनल में

जन जन विचार
...✍ कोलकाता

आईसीसी टी20 विश्व कप 2026 के सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड ने दक्षिण अफ्रीका को करारी शिकस्त देकर फाइनल में जगह बना ली। कोलकाता के ईडन गार्डन्स में खेले गए इस मुकाबले में न्यूजीलैंड ने 170 रनों के लक्ष्य को केवल 12.5 ओवर में हासिल कर लिया और 7.1 ओवर शेष रहते मैच अपने नाम कर लिया।

इस जीत के साथ न्यूजीलैंड अब अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में होने वाले फाइनल में खिताब जीतने की कोशिश करेगा- वही खिताब जो 2021 में उसके हाथ से फिसल गया था।

न्यूजीलैंड की जीत के नायक रहे फिन एलन, जिन्होंने केवल 33 गेंदों में नाबाद 100 रन की तूफानी पारी खेली। उनकी पारी में 10 चौके और 8 छक्के शामिल थे।

न्यूजीलैंड के बल्लेबाज फिन एलन ने केवल 33 गेंदों में शतक लगाकर टी20 विश्व कप के इतिहास में नया रिकॉर्ड बना दिया। उनकी पारी में 10 चौके और 8 छक्के शामिल थे। एलन ने आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए दक्षिण अफ्रीकी गेंदबाजों की जमकर धुनाई की और टीम को मात्र 12.5 ओवर में लक्ष्य तक पहुंचा दिया। यह टी20 विश्व कप इतिहास का सबसे तेज शतक भी बन गया।

यह टी20 विश्व कप इतिहास का सबसे तेज शतक बन गया, जिसने क्रिस गेल के पुराने रिकॉर्ड को 14 गेंद पहले तोड़ दिया।

एलन ने टिम सिफर्ट के साथ मिलकर पावरप्ले में ही मैच का रुख तय कर दिया। दोनों ने मिलकर 84 रन जोड़ दिए और दक्षिण अफ्रीकी गेंदबाजों को पूरी तरह बेअसर कर दिया।

टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड की टीम ने शुरुआत में ही दक्षिण अफ्रीका को झटका दे दिया। कोल मैककॉन्ची ने लगातार गेंदों पर क्विंटन डी कॉक और रयान रिकेल्टन को आउट कर दक्षिण अफ्रीका को 12 रन पर ही दो विकेट के झटके दे दिए।

इसके बाद एडन मार्करम और डेवॉल्ड ब्रेविस ने कुछ आक्रामक शॉट खेले, लेकिन न्यूजीलैंड के गेंदबाजों ने नियमित अंतराल पर विकेट लेते हुए दक्षिण अफ्रीका को दबाव में बनाए रखा।

मध्यक्रम में मार्को जैनसेन ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 27 गेंदों में अर्द्धशतक बनाया और टीम को 16 ओवर के बाद 113/5 तक पहुंचाया। लेकिन अंत में दक्षिण अफ्रीका 169 रन ही बना सकी, जो बड़े मैच के लिए पर्याप्त नहीं था।

170 रनों का पीछा करने उतरी न्यूजीलैंड ने शुरुआत से ही आक्रामक अंदाज अपनाया। फिन एलन और टिम सिफर्ट ने तीसरे ओवर से ही बड़े शॉट्स की बारिश शुरू कर दी। सिफर्ट ने 28 गेंदों में अर्द्धशतक बनाया, जबकि एलन ने उससे भी तेज गति से रन बटोरे। दोनों के बीच 117 रन की साझेदारी ने मैच को पूरी तरह न्यूजीलैंड के पक्ष में कर दिया।

कागिसो रबाडा ने सिफर्ट को आउट कर साझेदारी तोड़ी, लेकिन तब तक मैच पूरी तरह न्यूजीलैंड के कब्जे में जा चुका था। एलन ने अंत तक बल्लेबाजी करते हुए विजयी शॉट के साथ अपना शतक पूरा किया और टीम को शानदार जीत दिलाई।

कीवी कप्तान सैंटनर ने फाइनल के लिए भरी हुंकार

जन जन विचार
...✍ कोलकाता

टी20 विश्व कप 2026 के पहले सेमीफाइनल में दक्षिण अफ्रीका को हराकर न्यूजीलैंड ने शानदार अंदाज में फाइनल में जगह बना ली है। इस बड़ी जीत के बाद टीम के कप्तान मिचेल सैंटनर काफी उत्साहित नजर आए। उन्होंने टीम के प्रदर्शन की जमकर सराहना की और कहा कि फाइनल मुकाबले से पहले टीम के पास तैयारी के लिए पर्याप्त समय है।

मैच के बाद पोस्ट-मैच प्रेजेंटेशन में सैंटनर ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका पूरे टूर्नामेंट में मजबूत टीम रही है और उसने लगातार अच्छा प्रदर्शन किया था। ऐसे में इस मुकाबले में जीत हासिल करना टीम के लिए बड़ी उपलब्धि है।

सैंटनर ने बताया कि पिछले मुकाबले से सीख लेते हुए उन्होंने इस मैच में शुरुआत से ही स्पिन गेंदबाजी का इस्तेमाल किया।

उन्होंने कहा, 'दक्षिण अफ्रीका एक मजबूत टीम है। अहमदाबाद में हुए पिछले मुकाबले में हमने

शुरुआत में स्पिन गेंदबाजी नहीं कराई थी, जो हमारी गलती थी। इसलिए इस मैच में हमने जल्दी स्पिनर को गेंदबाजी दी और इससे हमें फायदा मिला।'

कप्तान ने सलामी बल्लेबाज फिन एलन की जमकर तारीफ की। एलन ने इस मैच में केवल 33 गेंदों में शानदार शतक लगाकर मैच का रुख पूरी तरह बदल दिया। सैंटनर ने कहा कि एलन की यह पारी टीम के लिए बेहद महत्वपूर्ण रही और उम्मीद है कि वह फाइनल में भी इसी तरह का प्रदर्शन करेंगे।

फाइनल मुकाबले को लेकर सैंटनर ने कहा कि टीम अभी इस जीत का आनंद ले रही है, लेकिन जल्द ही अगली चुनौती के लिए तैयारी शुरू करेगी।

हार के बाद छलका मार्करम का दर्द

जन जन विचार
...✍ कोलकाता

टी20 विश्व कप 2026 के पहले सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड से मिली करारी हार के बाद दक्षिण अफ्रीका के कप्तान एडन मार्करम ने इसे टीम के लिए 'एक बेहद खराब रात' बताया। पूरे टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन करने वाली दक्षिण अफ्रीकी टीम अहम मुकाबले में बिखर गई और फाइनल का टिकट गंवा बैठी।

मैच के बाद प्रेस कांफ्रेंस में मार्करम ने स्वीकार किया कि उनकी टीम बल्लेबाजी, गेंदबाजी और

फील्डिंग-तीनों विभागों में उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर सकी।

मार्करम ने कहा कि टीम ने मैच से पहले जो रणनीति बनाई थी, उसे मैदान पर लागू करने में नाकाम रही।

उन्होंने कहा, 'यह बस एक बहुत खराब रात थी। हमने खेल के तीनों विभागों में गलतियां कीं। फिन एलन की पारी ने हमसे मैच छीन लिया, लेकिन सच्चाई यह है कि हम अपनी योजनाओं को ठीक से लागू नहीं कर सके।'

दक्षिण अफ्रीकी कप्तान ने माना कि टी20 क्रिकेट में पावरप्ले बेहद निर्णायक होता है और न्यूजीलैंड ने वहीं मैच अपने नाम कर लिया।

मार्करम ने कहा कि फिन एलन और टिम सिफर्ट की तेज शुरुआत ने दक्षिण अफ्रीका के हाथ से मैच जल्दी छीन लिया।

लगातार जीते सात मैच, पर सेमीफाइनल में अटके

जन जन विचार
...✍ कोलकाता

दक्षिण अफ्रीका का प्रदर्शन टी 20 वर्ल्ड कप के पूरे टूर्नामेंट में शानदार रहा और टीम ने लगातार सात मैच जीते। लेकिन एडेन मार्करम की अगुवाई वाली टीम सेमीफाइनल की बाधा पार नहीं कर सकी। दक्षिण अफ्रीका टी20 विश्व कप में ग्रुप डी में शामिल थी और उसने अपने अभियान की शुरुआत कनाडा को 57 रन से हराकर की थी। इसके बाद उसे अफगानिस्तान से चुनौती मिली, लेकिन टीम सुपर ओवर में ये मुकाबला जीतने में सफल रही। दक्षिण अफ्रीका ने न्यूजीलैंड को ग्रुप चरण में सात विकेट से हराया था और फिर यूएई को छह विकेट से मात दी थी।

दक्षिण अफ्रीका ने इस तरह ग्रुप चरण में अपने सभी मुकाबले जीते और सुपर आठ में प्रवेश किया। सुपर आठ में टीम ने भारत जैसी मजबूत टीम को हराया। ऐसा लग रहा था कि टीम इस बार कुछ कमाल दिखाएगी। इसके बाद उसने वेस्टइंडीज को नौ विकेट से रौंदा और फिर जिम्बाब्वे को पांच विकेट से हराया। दक्षिण अफ्रीका की टीम अजेय रहते हुए सेमीफाइनल में पहुंची थी, लेकिन कीवियों ने उसके सफर पर ब्रेक लगा दिया।

बॉलीवुड एक्ट्रेसेज की धमाकेदार डेब्यू

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

हिंदी सिनेमा में हर साल कई ऐसे नए टेलेंट डेब्यू करते हैं जिनमें से कुछ हमारे दिमाग पर एक छवि छोड़ने में कामयाब होते हैं। इनमें सारा अर्जुन, अनीत पड्डा जैसे कुछ नाम शामिल हैं। वहीं अब लिस्ट में लेटेस्ट नाम जुड़ गया है द केरला स्टोरी 2 फेम एक्ट्रेस अदिति भाटिया का। इन तीनों ने ही अपनी दमदार उपस्थिति और प्रभावशाली अभिनय से दर्शकों को प्रभावित किया है। उम्मीद की जा रही है कि आने वाले समय में भी हमें इनके शानदार रोल पर्दे पर देखने को मिलेंगे।

अनीत पड्डा : सैयारा

अनीत पड्डा ने सैयारा फिल्म से सिनेमा जगत में कदम रखा और अपने दमदार अभिनय से दर्शकों का दिल जीत लिया। अपने किरदार में ताजगी और ईमानदारी लाते हुए अनीत ने कैमरे के सामने आत्मविश्वास और सहजता से भरपूर अभिनय किया।उन्होंने फिल्म के हर एक इमोशन को पर्दे पर बखूबी व्यक्त किया। इस फिल्म के बाद अनीत रातोंरात स्टार बन गई। एक्ट्रेस बहुत जल्द मैडॉक हॉरर कॉमेडी यूनिवर्स की फिल्म 'शक्ति शालिनी' में नजर आएंगी।

सारा अर्जुन : धुरंधर

सारा अर्जुन बहुत कम उम्र से ही मनोरंजन जगत से जुड़ी हुई हैं, उन्होंने चाइल्ड एक्टर के तौर पर अपने करियर की शुरुआत की थी। वर्षों से, उन्होंने कई शानदार प्रोजेक्ट में काम किया। इसमें 'पोन्नियिन सेल्वन- 1 और 2', 'देवा थिरुमगल', 'एक थी डायन', 'जज्बा', 'सांड की आंख', 'सैवाम', और 'सिल्लू करुप्पट्टी' शामिल हैं।

धुरंधर के साथ उन्होंने बॉलीवुड में कदम रखा और छा गईं। पर्दे पर उनका आत्मविश्वासपूर्ण प्रदर्शन और भावनात्मक गहराई वर्षों के अनुभव को दर्शाती है।

अदिति भाटिया : द केरल स्टोरी 2

अदिति भाटिया ने अपने करियर की शुरुआत बाल कलाकार के रूप में की थी और वे विज्ञापन जगत में भी एक जाना-पहचाना चेहरा रही हैं। उन्होंने कई विज्ञापनों में काम किया है। 5 महीने की उम्र में अदिति ने आईसीआईसीआई के लिए पहला विज्ञापन शूट किया था। अब वो 'द केरल स्टोरी 2' से मुख्य अभिनेत्री के तौर पर नजर आ रही हैं।

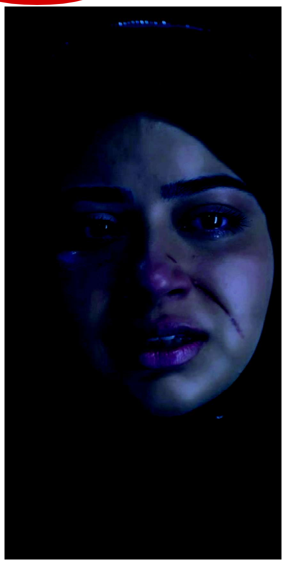

कविताएं

जग को रंगीला बनाएं

रंगों की फुहार है,
संगीत की बहार है,
प्रेम का जो रूप है,
होली वह त्योहार है।
लाल हो या पीला,
हरा हो या नीला,
हर रंग में बसता है
मन का रंग रंगीला।
सूखा हो या गीला,
हर रंग लगे नशीला,
होली में तो सब क्षमा-
हर दिल हो रंगीला।
आओ मिलकर रंग लगाएं,
मन का मैल मिटाएं,
प्रेम रंग में सबको रंगकर
जग को रंगीला बनाएं।।

गाएं प्रेम के गीत

मथुरा में उत्सव छाया,
गोकुल में आनंद आया,
वृंदावन में प्रेम-सुगंध,
बरसाने रंग बरसाया।
राधा के मन में कान्हा,
कान्हा के मन में राधा,
प्रेम की मधुर कहानी
गाती हर गली-पगडंडी सदा।
चारों ओर राधे-राधे
की गूंज रही मधुर तान,
रंग और प्रेम में डूबी
आई होली की पहचान।
गोप-गोपियां संग मिलकर
गाएं प्रेम के गीत,
राधा-कृष्ण की लीला से
होली हो जाती पुनीत।।

गोविंद कुमार विश्वास
मालीगांव, गुवाहाटी

दोबारा क्यों बन जाते हैं किडनी स्टोन

12 मार्च : विश्व किडनी दिवस

किडनी स्टोन का इलाज करवाने के बाद कई मरीजों में यह समस्या दोबारा हो जाती है। पुरानी डाइट और लाइफस्टाइल पर वापस लौट आने की वजह से ऐसा होता है। इस वजह से गुर्दे में मिनरल और साल्ट दोबारा जमने लगते हैं और पथरी का रूप ले लेते हैं। अगर आपको किडनी स्टोन को बार-बार बनने से रोकना है तो डाइट और लाइफस्टाइल में ये बदलाव जरूर करें।

यह सोचना बिल्कुल गलत है कि एक बार गुर्दे की पथरी निकलवाने के बाद दोबारा नहीं बनती। गलत खानपान, कम पानी पीना, ज्यादा नमक लेना, ऑक्सालेट वाले फूड्स खाना, मोटापा और कुछ मेटाबॉलिक समस्याओं के कारण दोबारा गुर्दे की पथरी का खतरा रहता है। एक्सपर्ट्स के अनुसार, अगर सही डाइट और लाइफस्टाइल फॉलो ना की जाए तो 5 साल के अंदर लगभग 40-50 प्रतिशत मरीजों में दोबारा पथरी बन सकती है। जब पेशाब में मौजूद मिनरल और साल्ट गुर्दे के अंदर क्रिस्टल के रूप में जमा होने लगते हैं, तब किडनी स्टोन बनते हैं। शरीर में पानी की कमी, कैल्शियम ऑक्सालेट और यूरिक एसिड का लेवल बढ़ने पर पथरी का खतरा बढ़ जाता है। इसके साथ हाई प्रोटीन डाइट, ज्यादा प्रोसेस्ड फूड और अनियमित जीवनशैली भी प्रमुख वजहों में आती हैं। किडनी स्टोन का इलाज करवाने के बाद अक्सर मरीज पुरानी और सामान्य डाइट पर लौट आते हैं। इससे दोबारा पथरी बनने का खतरा बढ़ जाता है। बचाव के लिए आपको हर दिन 2.5 से 3 लीटर पानी पीना, कम नमक लेना और बैलेंस्ड डाइट जैसी आदतें अपनानी चाहिए। अगर लोग सही डाइट और जीवनशैली अपनाकर रखें तो दोबारा स्टोन बनने के 60 प्रतिशत मामलों को रोका जा सकता है।

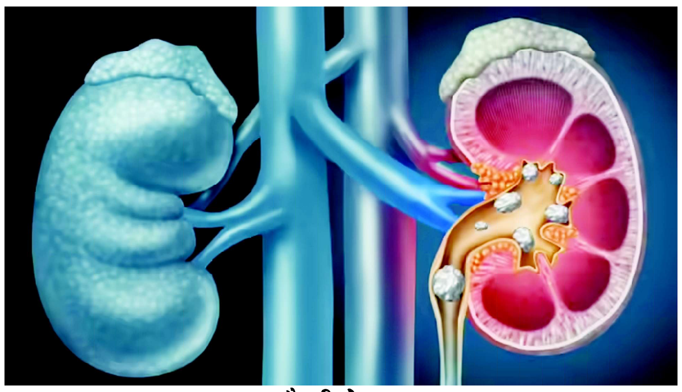

कैसी हो डाइट ?

8-10 गिलास पानी : दिनभर में इतने गिलास या इससे ज्यादा पानी पीएं, जिससे डिहाइड्रेशन नहीं होगा।

नींबू, संतरा और मौसंबी : ऐसे खट्टे फल साइट्रस एसिड से भरपूर होते हैं, जो पथरी बनने से रोकते हैं।

दूध, दही और छाछ : कैल्शियम से भरपूर इन चीजों को लेने से कैल्शियम ऑक्सालेट के कारण पथरी बनने का खतरा कम होता है।

फल, सब्जियां और साबुत अनाज : इन फूड्स के अंदर फाइबर भरा होता है, जो पाचन को सुधारता है।

नारियल पानी और छाछ : इन ड्रिंक्स से यूरिन फ्लो बढ़ता है और मिनरल जमा होने का खतरा टलता है।

करें परहेज

अत्यधिक नमक : जरूरत से ज्यादा नमक लेने पर पेशाब में कैल्शियम की मात्रा बढ़ जाती है।

हाई ऑक्सालेट वाले फूड : चुकंदर, पालक, चॉकलेट, सोया और नट्स जैसे हाई ऑक्सालेट फूड को लिमिट में खाएं।

हाई प्रोटीन डाइट और रेड मीट: यह चीजें यूरिक एसिड बढ़ाकर पथरी का खतरा बढ़ाती हैं।

पैकेज्ड जूस और सॉफ्ट ड्रिंक : ऐसी चीजों के अंदर शुगर और फॉस्फेट की मात्रा बहुत ज्यादा होती है, जिससे खतरा बढ़ सकता है।

ज्यादा कॉफी-चाय : यह ड्रिंक्स ड्यूरेटिक होती हैं यानी पेशाब का उत्पादन बढ़ाती हैं। इससे शरीर में डिहाइड्रेशन बढ़ता है।

पूर्वांचल प्रिंट्स की ओर से राजनाथ पाल द्वारा जीएमसीएच रोड, हरबाला मार्केट, भांगागढ़, गुवाहाटी-781005 से प्रकाशित एवं मुद्रित। संपर्क : 69001 26012
ई-मेल:official.janjanvichar@gmail.com, वेबसाइट: www.janjanvichar.in ●संपादक : धनेश्वर चौधरी